

व्यंजना

2023-24



शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा ए+ ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

महाविद्यालय पत्रिका समिति 2023-24



डॉ. सुचित्रा गुप्ता



डॉ. बलजीत कौर



डॉ. संजु सिन्हा



डॉ. सनत कुमार साहू



डॉ. प्रदीप जांगड़े



डॉ. तरुण कुमार साहू



महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह का सेवानिवृत्ति समारोह

व्यंजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2023-24

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा
A+ ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संरक्षक

डॉ. एम.ए. सिद्धिकी
प्राचार्य



संपादक मंडल

डॉ. सुचित्रा गुप्ता

डॉ. बलजीत कौर

डॉ. संजु सिन्हा

डॉ. सनत कुमार साहू

डॉ. प्रदीप जांगड़े

डॉ. तरुण कुमार साहू

यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एक मात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email- pprinci2010@gmail.com

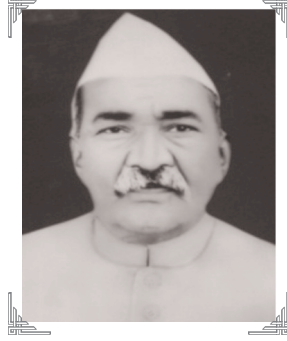
अनुक्रम

01. विश्वनाथ यादव तामस्कर - एक परिचय.....	03
02. प्राचार्य की कलम से	04
03. राजनीति में महिलाओं की भागीदारी - तरुण कुमार साहू एवं शाहबाज अली	06
04. 'युवा सृजन की दिशाएँ' कार्यशाला में पठित कवितापाठ	10
05. आत्महत्या : एक घातक समस्या - प्रतिभा दुबे	17
06. छात्र-छात्राओं की कवितायें	19-22
07. Jone Fosse - Nobel Laureate in English Literature - Ms. Ranjeeta Rani	23
08. Words of an Alumna - Parul pandey.....	26
09. संवेदन शून्यता - प्रतिभा श्रीवास्तव	28
10. मेरे जीवन का अविस्मरणीय पल - संस्मरण.....	29
11. आदिवासी लोकजीवन एवं संस्कृति- मनीष सिन्हा.....	30
12. कैलाश सत्यार्थी मानव स्वतंत्रता और अच्छाई के प्रबल समर्थक - रामकिशोर वस्त्रकार	35
13. छात्र-छात्राओं की कवितायें	40-44
14. This Summer - Dr. Monika Sharma	45
15. Fostering Youth Well-being in an Online World- Prof. Latika Tamrakar	50
16.. Predicting Climate Change in Science Fiction - Kusumita Sonwani	55
17. बदलाव - प्रतिभा श्रीवास्तव	58
18. Millets - Namrate Tirkey	59
19. आत्मशक्ति का बोध - प्रिषिता ताम्रकार	63
20. India's Millets Revolution - Manisha Sinha	65
21. 12th Fail फिल्म की समीक्षा - डॉ. सीमा पंजवानी	70
22. शताब्दी स्मरण-.....	74

आवरण चित्र - इतिहास विभाग द्वारा आयोजित बांस शिल्प प्रशिक्षण कार्यशाला में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित कलाकृतियाँ

विश्वनाथ यादव तामस्कर : एक परिचय

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुझारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जगायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।



स्व.श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर का जन्म दुर्ग के बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 में हुआ था। आपके पिता श्री यादव राव वामन तामस्कर कोर्ट में अर्जीनवीस थे एवं माता का नाम पुतली बाई था। आपकी शिक्षा दुर्ग तथा बिलासपुर में पूर्ण हुई तथा कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये। यहां पर आप गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने लगे। इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिष्कार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़ कर अपने ग्राम वापस आ गये। आंदोलन समाप्त होने के पश्चात पुनः पढ़ाई प्रारम्भ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री लेकर वकालत का पेशा अपनाया किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पड़े। नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ। इस सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुये। ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नहीं मांगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष का कठोर कारावास दिया। जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत सी सम्पत्ति और ग्रंथालय को नीलाम कर दिया गया। तामस्कर जी शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके बल्कि जेल से छूटते ही पुनः आंदोलन में कूद पड़े। शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुए दोबारा 9 माह के लिये जेल गये। साथ ही सरकार ने उनसे वकालत करने का अधिकार छीन लिया। ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर आखों पर बैठाया था। तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा कौंसिल के चेयरमेन चुन लिये गये। 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के सदस्य तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को सुशोभित किया। 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से मध्यप्रान्त के धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधि निर्वाचित हुये। 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया तथा गांधी जी द्वारा संचालित 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया। स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पाँच वर्षों की जेल यात्रा की थी। इसी बीच समाज सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे।

1952 के पहले आम चुनाव में स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में बेमेतरा क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजयी हुये तो 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने। म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया। आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुँचाते रहे। शायद छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण और बहुत पहले हो जाता किन्तु नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया। छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुझारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी। ऐसे कर्मठ एवं माटीपुत्र देशभक्त के नाम पर हमारे महाविद्यालय का छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामकरण किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है।

2023-24

प्राचार्य की कलम से

मैं महाविद्यालय पत्रिका 'व्यंजना' के लिये अपने शब्दों को कलमबद्ध करते हुए अभिभूत हूँ।

शिक्षण सत्र 2023-24 में अध्ययनरत समस्त छात्र-छात्राओं, उनके अभिभावकों तथा महाविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य का मैं संस्था के मुखिया के रूप में हृदय से स्वागत करता हूँ। मैं यह मानता हूँ कि शिक्षा, समर्पित शिक्षकों, प्रेरित छात्रों और उत्साही अभिभावकों के बीच एक साझा प्रतिबद्धता है। आज महाविद्यालय की भूमिका न केवल अकादमिक उत्कृष्टता हासिल करना है, बल्कि अपने छात्रों को आजीवन सीखने वाले, महत्वपूर्ण विचारक और इस वैश्विक एवं गतिशील समाज के उत्पादक सदस्य बनने के लिए प्रेरित कर उन्हें सशक्त बनाना भी है।



शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग, ने न केवल सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ प्रांत में एक अलग पहचान बनाई है, बल्कि छात्रों को विविध विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करके अपनी सीमाओं के बाहर भी अपने पंख फैलाए हैं।

हमारा मानना है कि गुणवत्ता कभी आकास्मिक नहीं होती यह हमेशा बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयासों का परिणाम होती है। अतः शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्राप्त करना महाविद्यालय का प्रमुख लक्ष्य है। किन्तु साथ ही राष्ट्र एवं समाज की जरूरतों को समझते हुए तदनुसार अपने विद्यार्थियों को प्रासंगिक बनाने की क्रिया में भी अपने दायित्व के निर्वाह में हम कहीं भी पीछे नहीं हैं।

हमारा लक्ष्य विद्यार्थियों के अभिभावकों से निरन्तर संवाद स्थापित कर, संस्था को और अधिक सशक्त बनाना है। अभिभावक, शिक्षक, विद्यार्थी संगठन (पीटीएसए) इस दिशा में सक्रिय एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

2023-24

महाविद्यालय अपने स्थापना के 66 वर्ष में प्रवेश कर रहा है। स्थापना वर्ष 1958 से लेकर आज तक महाविद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। विगत सत्र में ही नैक (मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद) बैंगलुरु द्वारा मूल्यांकन कर उच्चतम अंकों के साथ 'ए-प्लस ग्रेड' प्रदान किया गया। यह तथ्य सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ प्रांत में महाविद्यालय को न केवल विशिष्ट स्थान प्रदान करता है, वरन उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोच्च शिखर को स्पर्श करने की गुरुत्तर जिम्मेदारी की चुनौती भी प्रदान करता है। इसे स्वीकार कर महाविद्यालय विद्यार्थियों के लिये अनेक रोजगारमूलक पाठ्यक्रमों को संचालित करने के साथ-साथ प्रायोगिक परीक्षाओं हेतु सेमीनार, वर्कशाप एवं कोचिंग कक्षाओं का आयोजन सतत् रूप से कर रहा है।

महाविद्यालय की एन.सी.सी., एन.एस.एस. एवं रेडक्रॉस इकाईयाँ विद्यार्थियों को एक अनुशासित एवं श्रेष्ठ विद्यार्थी बनाने के साथ ही एक सक्षम नागरिक बनाने के लिए सतत सक्रिय है। महाविद्यालय में विद्यार्थियों को सर्वश्रेष्ठ सुविधाएँ प्रदान करने हेतु अधोसंरचना का विकास निरन्तर किया जा रहा है। प्रशासन एवं जनभागीदारी के प्रयासों से धीरे-धीरे हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

'व्यंजना' पत्रिका भी उन्हीं प्रयासों की एक समृद्ध कड़ी है। मुझे विश्वास है कि छात्र-छात्राएँ अपनी रचनात्मक प्रतिभा के द्वारा इसे और भी प्रभावशाली बनाएँगे।

शुभकामनाओं सहित

(डॉ. एम.ए. सिद्धिकी)
प्राचार्य

2023-24



राजनीति में महिलाओं की भागीदारी

तरूण कुमार साहू (सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान)
एवं शाहबाज अली (अतिथि सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान)

भूमिका -

भारत में स्वतंत्रता आंदोलन से ही राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भूमिका देखी जाती रही है। सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, सावित्री बाई फुले, विजयलक्ष्मी पंडित, कस्तूरबा गांधी आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आजादी के बाद भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनने का गौरव श्रीमती इंदिरा गांधी को प्राप्त हुआ, जो 1966 से 1977 तक और फिर 1980 से 1984 तक देश की प्रधानमंत्री रहीं। इसके बाद भारत में प्रथम महिला राष्ट्रपति के रूप में श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने शपथ ली। भारत के दो सर्वोच्च संवैधानिक पदों पर महिलाओं की पहुँच, भारत में राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भूमिका का जीवंत उदाहरण है। अन्य उदाहरणों की बात करें

तो विभिन्न राज्यों की मुखिया के रूप में महिलाओं की भूमिका रही है। मसलन भारत के कई राज्यों में महिला मुख्यमंत्री के रूप में सुचेता कृपलानी, नंदिनी सत्पथी, जयललिता, मायावती, सुषमा स्वराज, शीला दीक्षित आदि ने सक्रिय रूप से अपनी जिम्मेदारियाँ निभाई हैं। सुचेता कृपलानी को उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि भारत के किसी भी राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री बनने का गौरव प्राप्त है।

वर्तमान संसद में महिलाओं की भूमिका को देखें तो लोकसभा में 78 सांसद, राज्यसभा में 25 महिला सांसद मौजूद हैं। गौरतलब है कि भारतीय संसद में आजादी के बाद पहली बार महिला सांसदों की संख्या 100 के आंकड़े को पार कर गई है। वर्तमान में केंद्र सरकार के महत्वपूर्ण मंत्रालय में महिला मंत्रियों की उपस्थिति महिला

2023-24

सशक्तिकरण का प्रमाण है। निर्मला सीतारमन, स्मृति ईरानी, निरंजन ज्योति और रेणुका सिंह आदि को केंद्र सरकार में महत्वपूर्ण मंत्रालय को संभालते हुए देखा जा सकता है। भारत में महिलाओं के लिए 1992 का साल महत्वपूर्ण साबित हुआ, जब 73 वें संविधान संशोधन में 1/3 प्रतिशत सीटों का आरक्षण किया गया। यह नियम 74 वें संविधान संशोधन द्वारा स्थानीय नगरीय निकायों में भी महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए लागू किए गए हैं। जिससे ग्राम पंचायत मुखिया बनने वाली महिलाओं की संख्या तेजी से बढ़ी है।

संविधान में महिलाओं के लिए उपबंध

भारत की आजादी के तुरंत बाद संविधान के भाग -3 में महिला व पुरुष को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से एक समान माना और साथ ही राज्य के नीति निर्देशक तत्व में समान काम के लिए समान वेतन देने की बात की गई है। कोई भी जो 18 साल का हो गया हो वह अपना मत प्रयोग कर सकता है, साथ ही 25 साल का होने पर वह लोकसभा के चुनाव, 30 साल का होने पर राज्यसभा का चुनाव लड़ सकता है। फिर वह चाहे किसी भी लिंग का हो अनुच्छेद - 325 और 326 राजनीतिक समानता और मत देने के अधिकार की गारंटी देता है। 1992 के 73 वें, 74 वें संविधान संशोधन में महिलाओं के लिए 1/2 पंचायती राज में सीट आरक्षित है, जिससे महिलाओं की जमीनी स्तर पर भागीदारी सुनिश्चित होती है। छत्तीसगढ़ राज्य में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत सीटें पंचायत में आरक्षित हैं।

कम प्रतिनिधित्व के कारण :-

लिंग संबंधी रूढ़ियां :- पारंपरिक रूप से घरेलू गतिविधियों के प्रबंधन की भूमिका महिलाओं को सौंपी गई है। महिलाओं को उनकी रूढ़वादी भूमिकाओं से बाहर निकलने और देश की निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

प्रतिस्पर्धा :- राजनीति किसी भी अन्य क्षेत्र की तरह प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र है। अंततः महिला राजनेता भी प्रतिद्वन्द्वी ही मानी जाती हैं। कई राजनेताओं को भय है कि

महिला आरक्षण लागू किये जाने पर उनकी सीटें बारी-बारी से महिला उम्मीदवारों के लिए आरक्षित की जा सकती हैं, जिससे स्वयं अपनी सीटों से चुनाव लड़ सकने का अवसर वे गंवा सकते हैं।

राजनीतिक शिक्षा का अभाव : शिक्षा महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करती है। शैक्षिक संस्थानों में प्रदान की जाने वाली औपचारिक शिक्षा नेतृत्व के अवसर पैदा करती है और नेतृत्व को आवश्यक कौशल प्रदान करती है। राजनीति की समझ की कमी के कारण वे अपने मूल अधिकारों और राजनीतिक अधिकारों से अवगत नहीं हैं।

कार्य और परिवार : पारिवारिक देखभाल एवं



उत्तरदायित्वों के असमान वितरण का परिणाम यह होता है कि महिलाएं घर और बच्चों की देखभाल में पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक समय देती हैं। एक महिला को न केवल गर्भावस्था और प्रसव के दौरान अपना समय देना पड़ता है, बल्कि यह तब तक जारी रहता है जब तक कि बच्चा देखभाल के लिये माता-पिता पर निर्भर न रह जाए।

राजनैतिक नेटवर्क का अभाव :- राजनीतिक निर्णय निर्माण में पारदार्शिता की कमी और अलोकतांत्रिक आंतरिक प्रक्रियाएं सभी नए प्रवेशकों के लिये चुनौती पेश करती हैं, लेकिन महिलाएं इससे विशेष रूप से प्रभावित होती हैं, क्योंकि उनके पास राजनीतिक नेटवर्क की कमी होती है।

संसाधनों की अल्पता :- भारत की आंतरिक

2023-24

2023-24

2023-24



राजनीतिक दल संरचना में उनके कम अनुपात के कारण, महिलाएँ अपने राजनीतिक निर्वाचन क्षेत्रों के पोषण के लिये संसाधन और समर्थन इकट्ठा करने में विफल होती हैं। महिलाओं को चुनाव लड़ने के लिये राजनीतिक दलों से पर्याप्त वित्तीय सहायता नहीं मिलती है।

सामाजिक शर्तें :- उन्हें अपने ऊपर अधिरोपित हुक्मों को स्वीकार करना होगा और समाज का भार उठाना होगा। सार्वजनिक दृष्टिकोण न केवल यह निर्धारित करता है कि आम चुनाव में कितनी महिला उम्मीदवार विजयी होती हैं, बल्कि यह भी प्रभावित करता है कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कितनी महिला उम्मीदवारों को कार्यालय के लिये उचित माना और नामांकित किया जाता है।

अमैत्रीपूर्ण वातावरण :- कुल मिलाकर राजनीतिक दलों का माहौल भी महिलाओं के अनुकूल नहीं है, उन्हें पार्टी में अपनी जगह बनाने के लिये कड़ा संघर्ष करना पड़ता है और कई स्तर पर अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है। राजनीति में हिंसा बढ़ती जा रही है। अपराधीकरण, भ्रष्टाचार, असुरक्षा में उल्लेखनीय वृद्धि ने महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र से बाहर कर दिया है।

भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में सुधार

भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को समझने के कुछ मुख्य बिंदु हैं - जैसे की कितनी महिलाएं वोट देती हैं? कितनी महिला प्रत्याशी चुनाव लड़ती हैं? कितनी महिलाएं सांसद/विधानसभा/स्थानीय चुनावों में चुनकर आती हैं? कितनी महिलाएं चुनाव संबंधित कार्य या

राजनीतिक गतिविधियाँ जैसे पार्टी वर्कर और समर्थक के रूप में काम करती हैं? आजादी के बाद यह देखा गया है कि मतदान करने वाली महिलाओं की संख्या पुरुष के समान होती जा रही है। उदाहरण के लिए 1962 में 63 प्रतिशत पुरुष मतदाता व 46.6 प्रतिशत महिला मतदाता थे। जिनके बीच का अंतर 16 प्रतिशत था। वहीं लोकसभा चुनाव 2019 में 67.3 प्रतिशत पुरुष

व 66.9 प्रतिशत महिला मतदाता रहीं। जिनके बीच का अंतर 0.4 प्रतिशत का रह गया है। वहीं देखा जाए तो महिलाओं के द्वारा चुनाव में भागीदारी की संख्या लगातार बढ़ती हुई देखी जा रही हैं। जहाँ लोकसभा चुनाव 1957 में 45 महिला उम्मीदवार थीं, वहीं साल 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में कुल 8049 प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे थे। इनमें अलग-अलग पार्टी से 724 महिला उम्मीदवार मैदान में थीं। स्वतंत्र भारत के पहले आम चुनाव 1952 में जहाँ 22 (5 प्रतिशत) महिला सांसद चुनकर आई थीं। मौजूदा लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या 78 (14 प्रतिशत) है और राज्यसभा में 25 सांसद (11 प्रतिशत) हैं। दोनों सदन की महिला सांसदों को मिलाकर कुल संख्या - 103 होती है। बड़ी बात ये है कि लोकसभा में महिला सांसदों की यह हिस्सेदारी अभी तक की सबसे अधिक है। महिलाओं का मतदान में भाग लेना, संसद या विधानसभा में चुनकर आने के अलावा राजनीति में किस तरीके की भागीदारी है, उसका मूल्यांकन करना अत्यंत आवश्यक है। जैसे कि महिलाएं राजनीतिक रैलियों या डोर टू कैंपेन के अतिरिक्त पार्टी की अन्य दूसरी गतिविधियों में किन तरीकों से भागीदारी निभा रही हैं, यह भी ध्यान देने योग्य है।

निष्कर्ष -

राजनीति में महिलाओं की भूमिका बढ़ाने से न केवल राजनीतिक - आर्थिक रूप से भी महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित किया जा सकता है। महिलाओं की

2023-24

राजनीति में उपस्थिति से ही लोकतांत्रिक मूल्य को सही मायने में स्थापित किया जा सकता है। क्योंकि महिलाएँ किसी भी समाज में आधी आबादी की प्रतिनिधित्व करती हैं। महिलाओं की बढ़ती भूमिका के मद्देनजर बात की जाए तो ये अपनी सामाजिक समस्याओं से भली-भाँति परिचित रहती हैं, जिसके चलते उन समस्याओं को प्रतिनिधि सभा में उठाकर उनका उचित समाधान कर सकती हैं। साथ ही महिला संबंधी कानूनों में भी महिलाओं के द्वारा स्वस्थ



बहस से सुधार की संभावना बनी रहती है। इसी के साथ महिलाओं के कार्यबल में वृद्धि से संबंधित भूमिका को बढ़ाने वाले कानूनों में भी सुधार के सुझाव बेहतर स्तर पर उपलब्ध हो सकते हैं।

महिलाओं की पंचायत स्तर पर भूमिका बढ़ाने, ढांचे से संबंधित समस्याओं को दूर करने के प्रयास तेज हुए हैं जिनमें पेयजल की उपलब्धता, शौचालय का निर्माण आदि मुद्दे प्रमुख रूप से शामिल हैं। वैसे तो भारतीय राजनीति पर पितृसत्ता का बड़ा दबाव रहा है लेकिन जागरूक होते समाज में इस रूढ़िवादी सोच में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिला है। जिसे PEW रिसर्च सेंटर के द्वारा किए गए सर्वे में देखा जा सकता है। सर्वे के मुताबिक हर दो भारतीयों में से एक का कहना है कि महिला और पुरुष समान रूप से अच्छे राजनीतिक नेता बन सकते हैं और हर 10 में से एक का मानना है कि महिलाएं आमतौर पर पुरुषों की तुलना में बेहतर राजनीतिक नेता बन सकती हैं।

एक अनुमान के मुताबिक महिला विधायकों के कारण उनके विधानसभा क्षेत्र में आर्थिक प्रदर्शन पुरुष विधायकों की अपेक्षा लगभग 1.8 प्रतिशत हर साल बढ़ जाता है। कुछ पदों पर आसीन पुरुषों के मुकाबले महिलाओं

में भ्रष्टाचार की कम संभावना होती है। महिलाओं की बढ़ती भूमिका ने सामाजिक न्याय भी सुनिश्चित किया है।

लैंगिक समानता की लड़ाई सिर्फ महिलाओं को संसद के द्वारा 33 प्रतिशत आरक्षण देने से ही खत्म नहीं हो जाती यह तो सिर्फ एक लड़ाई की शुरुआत भर है। लेकिन सिर्फ गर्दन उठाकर संसद की तरफ देखने से आदमी और औरत को बराबर अवसर नहीं मिलेंगे। हमें अपने घरों में देखना होगा कि जब अखबार आता है तो उसे पुरुष पढ़ते हैं या महिलाएँ भी पढ़ती हैं।

आपके घर में दिन की शुरुआत में कौन बालकनी में बैठा होता है और कौन किचन के काम करता है। घर के कामकाज हों या दफ्तर के कामकाज हों, भाषा के प्रयोग में कितनी लैंगिक समानता है, कितने अवसरों की समानता है। जब अपने घर की लड़कियों के लिए कोर्स का सिलेक्शन करते हैं, जब शाम ढलते ही लड़कियों के लिए कर्फ्यू के समय तय किए जाते हैं। यह नियम पुरुषों पर क्यों लागू नहीं करते हैं। घर के लिए किए जाने वाले फैसलों में उनकी कितनी बातें सुनी जाती है, और अमल में लाई भी जाती है। आशा है धीमे-धीमे उपरोक्त बातें भी भारतीय राजनीति एवं समाज के व्यावहारिक धरातल पर नजर आयेंगी।⁰⁰⁰

2023-24

2023-24

2023-24

युवा सृजन की दिशाएँ

हिन्दी विभाग के तत्वावधान में 30-31 जनवरी, 2024 को कविता कार्यशाला 'युवा सृजन की दिशाएँ' का आयोजन किया गया। अंचल के वरिष्ठ कवियों के मार्गदर्शन में सम्पन्न इस कार्यशाला में दुर्ग-भिलाई के 30 से अधिक प्रतिभागी कवियों की काव्य रचनाओं का पाठ हुआ तथा उनकी समीक्षा की गई। इसमें महाविद्यालय के प्रतिभागियों ने भी भाग लिया। उनके द्वारा पढ़ी गयी रचनाएँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

1.

ए छोटू

कभी माँ ने मुझे सुलाया था,
सुबह प्यार से जगाया था,
मीठी-मीठी बातों संग
प्यार से खाना खिलाया था।
हो गई मुझसे जो भूल कहीं
एक फटकार तो चिंता की
लगती है।

फिर सबसे वो कहती फिरती
मेरे बच्चे की क्या गलती है?
राजा-बाबू, प्यारा बेटा
क्या-क्या न मुझको पुकारे वो
नजर से बचाये मुझे वो सबकी
पर एक टक मुझे निहारे वो
आज माँ न जाने कहाँ गई?
दूर हुए सब नाते हैं

हँसना, खेलना, खाना अब
ये सब न मुझको भाते हैं
जिन नजरों का राजकुमार था,
वो आँखें मुझसे रूठ गईं
चमकती थी जो लकीरें हाथों पर
वो तो कब की मिट गईं।
आज काम पर आया जब

माँ की याद आई बहुत
जब पेट जल रहा भूख से
माँ की याद आई बहुत
अब न मैं राजा बेटा हूँ
न रहा किसी का राजदुलारा
चौंक कर ध्यान टूटा मेरा
जब किसी ने 'ए छोटू' !
कहकर मुझे पुकारा !!!

- रसना मुखर्जी
शोध छात्रा
हिंदी विभाग

2023-24



2.

पापा, मेरे पापा हैं

एक ऐसा इंसान जो मेरी जिन्दगी में एक
अलग एहमियत रखता है,
वो पापा मेरे पापा हैं,
कहते हैं, लोग मुझे तेरी आँख,
तेरी नाक, तेरा चेहरा, जिनके जैसा है,
वो पापा मेरे पापा हैं,

याद नहीं मुझे की उनकी उंगली थामकर
चलना सीखा है,
हाँ पर जानती हूँ जिसने मुझे सही रास्तों पर
चलना सिखाया है,
वो पापा मेरे पापा हैं,

जिनसे गीत संगीत मैंने सीखा भाव से
भगवान तक को मैंने जाना,
वो पापा मेरे पापा हैं,

थक जाऊँ तो कांधे पर उठा ले और गिर पडूँ
तो पल भर में मुझे थाम ले, वो पापा मेरे पापा
हैं,

नहीं की मैंने कभी हाथी और घोड़े की सवारी
पर जिनकी गोदी चढ़कर मैंने पूरा घर घूमा है,
वह पापा मेरे पापा हैं,

मेरा मन, मेरा स्वाभिमान, मेरा अभिमान,
मेरी ख्वाहिश, मेरी हर सपने पूरे करने वाले
वो पापा मेरे पापा हैं,

2023-24

2023-24

2023-24

जन्म तो मुझे माँ ने दिया पर मेरी पहचान
जिससे है
वो पापा मेरे पापा हैं,

सोचती हूँ हमेशा की क्यों एक ही शर्ट को हर
दिवाली पहना करते हैं,
मेरी ख्वाहिश को पूरी करने के लिए वह सिली
चप्पल तक पहना करते हैं,
वो पापा मेरे पापा हैं,

कड़ी धूप में मेहनत करके भी सारी थकान
भुला दें
सिर्फ मेरी एक मुस्कान देखकर,
वो पापा मेरे पापा हैं,

मेरी हर खुशी जिनकी खुशी होती है,
जिनको मेरे लिए फिक्र और मेरे भविष्य की
चिंता होती है,
वो पापा मेरे पापा हैं,

जो मेरी पहचान, जो मेरी हर खुशी,
जो लाखों में एक हैं, जो मेरी जान हैं,
वो पापा मेरे पापा हैं,

हाँ मेरी कई गलतियाँ हैं कुछ जान के और
कुछ अनजाने से
पर मेरी हर गलती हँस के भुला दें, जिनके
गुस्से में भी प्यार हैं,
वो पापा मेरे पापा हैं.....

पापा..

आप मुझे कहते हैं ना कि जिंदगी में
हमेशा संभल के चलना
सच कहूँ तो इस जिंदगी में मेरे पैर कैसे
डगमगा जाएंगे
क्योंकि सही रास्तों पर चलना तो मुझे आप ने
ही सिखाया है ना.....
पापा मेरे पापा

- लिसारानी

बी.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

2023-24

3.
देश के वीर जवान

जरूरत जब पड़ेगी तो मैं खुद को ही मिटा दूँगा...
मेरे जीवन की खुशियों को तिरंगे पर लुटा दूँगा ...

मेरी सांसों में बसता है तिरंगा और भारत माँ.....
मिटाने की करें कोशिश मैं उसको ही मिटा दूँगा.....

तीन रंगों का ये कपड़ा हमारे देश की है शान....
ना तेरा है ना मेरा है पूरे देश की ये जान.....

सभी के दिल में बसता है सभी की जाने में बसता...
अरे तुम गौर से देखो इसमें बसता है हिंदुस्तान...

किसी गजरे की खुशबू को महकता छोड़ आया हूँ
अपनी नन्ही सी चिड़िया को चहकता छोड़ आया हूँ।

मुझे छाती से अपने तू लगा लेना ए भारत माँ..
मैं अपनी माँ की बाहों को तरसता छोड़ आया हूँ

मैं भारतवर्ष का हरदम अमिट सम्मान करता हूँ..
यहां की चांदनी मिट्टी का गुणगान करता हूँ.....

मुझे चिंता नहीं है स्वर्ग जाकर मोक्ष पाने की.....
तिरंगा हो कफन मेरा यही अरमान रखता हूँ

- हरीश कुमार साहू



2023-24

2023-24

2023-24

4.
पापा

चाहूँ तो लिख ना पाऊँ और लिखूँ तो रुक ना पाऊँ
दो शब्द हैं पापा
हर जादू फेल है जिसके सामने वो जादूगर हो तुम
हाँ पापा हर जादू फेल है जिसके सामने वो जादूगर हो
तुम

नहीं पता तुम कहाँ से पैसे लाते हो
जितने माँगो उस से ज्यादा लाके देते हो
हाँ तुम जादू से पैसे लाते हो ना
जादूगर होकर भी तुम जादू दिखाते नहीं
फिक्र होकर भी तुम फिक्र जताते नहीं
टेंशन होकर भी तुम टेंशन दिखाते नहीं
वो जादूगर हो तुम हाँ पापा, वो जादूगर हो तुम

हमारे फटे कपड़े देखकर वो कपड़े लाए
खुद की फटी बनियान देख ना पाए
खुद मम्मी की डाँट सुनकर जो हमे डाँट से बचाए
वो जादूगर हो तुम हाँ पापा, वो जादूगर हो तुम

सच मे पापा तुम्हें गले लगाना बहुत ही मुश्किल है
तुझे समझना तो और भी मुश्किल है
बेटी होकर भी तुम्हारा यूँ बेटा कहकर पुकारना
फिक्र ना करो पापा तुम्हारी ये बेटियाँ बेटों का फर्ज
निभायेंगी
बहुत ही जल्द सारी जिम्मेदारियाँ निभायेंगी

और हाँ जादू तुमने भी देखा है जादू मैने भी देखा है
पर तुम जैसा जादूगर कहीं ना देखा है
जिंदगी में जो आप हो और कुछ भी नहीं चाहिए
आपके बिना दुनिया भी मिले तो नहीं चाहिए
ऐसे तो कह नहीं पाते पर कहना चाहिए ना पापा
Love u papa
love u papa
love u papa...

- सुधा वर्मा



2023-24

5.
रात.....

अंधेरे से भरी हुई ये रात.... हर किसी के लिए
अलग हो जाती है,
कोई रात के अंधेरे में अपनी तन्हाई में रहता है,
कोई अपने से ही शिकायत कर रोता है
कोई रात में भी न सो पाता है.....
खुद से बस लड़ता है,
कोई खुद से पूछ रहा होता है....
आखिर मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है?
कोई अपने ख्वाहिशों के सपनों में रहता है
कोई रात के अंधेरे में अपने हर दुख को याद कर
खुद से लड़ता है
ये रात बड़ी भयानक बन जाती है,
जब कोई किसी को याद कर रोता है,
नींद आ जाए, ये सब चाहते हैं,
पर तकलीफों के परे वो रात में न सोता है
हर कोई सोचता है, मुझसे हो पायेगा क्या?
जो सपने देखे हैं..... पूरे हो पाएँगे क्या?
मेरी जिंदगी में भी, मेरा मुकाम आ पायेगा क्या?



ये जिंदगी जो जी रहा हूँ,
उससे बेहतर हो पायेगा क्या?
ये जिंदगी जी रही हूँ, उससे बेहतर हो पायेगा क्या?
इन रातों में वो.... खुद को ढूँढता है,
ये रात लंबी बन जाती हैं,
जब जहन में हजार सवाल होते हैं,
ये रात भी बड़ी कमाल की होती है, नींद तकलीफ
बहुत देती है.... !!

- दिव्या वर्मा

2023-24



6. गुरुत्वाकर्षण

लौट आए हैं

आकाश की ओर फेंके गए पत्थर,

गुरुत्वाकर्षण की सीमा को पार किए बिना

पृथ्वी की गोद में,

थक, हार कर

पथराई अहिल्या की तरह

किसी राम की

तलाश में।

- टिकेन्द्र कुमार यदु
शोधार्थी, हिंदी विभाग

2023-24

आत्महत्या : एक घातक समस्या

प्रतिभा दुबे
पीजी डिप्लोमा

2023-24

वर्तमान समय में आत्महत्या एक ऐसी समस्या बन चुकी है जो एक महामारी का रूप ले रही है। पूरी दुनिया इस गंभीर समस्या से जूझ रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हर सेकण्ड कोई न कोई व्यक्ति आत्महत्या करने की कोशिश करता है, और हर 40 सेकण्ड में कोई न कोई आत्म हत्या करता है। हैरानी की बात यह है कि आत्महत्या करने वाले अधिकतर व्यक्ति युवा वर्ग



के होते हैं। उन्हें हर परेशानी से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या ही आसान रास्ता दिखाई पड़ता है।

यह अत्यन्त ही विचारणीय बात है कि जो युवा पीढ़ी हमारे देश का उज्ज्वल भविष्य बन सकती है, वह आत्महत्या रूपी अंधकार की ओर अग्रसर हो रही है। यह समस्या क्यों इतनी बढ़ रही है और इसे किस प्रकार रोका जाये, इस पर ध्यान देने की महती आवश्यकता है।

आत्महत्या के कारण - यह कल्पना करना मुश्किल है कि ऐसा कौन-सा कारण है, जो व्यक्ति को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करता है। पहले आत्महत्या का कारण मुख्य रूप से अवसाद या तनाव होता था। परन्तु आजकल तो जैसे आत्महत्या करना एक ट्रेंड या फैशन सा बन गया है। हर दूसरे दिन अखबार में आत्महत्या की खबर पढ़ने को मिलती है।

“माता-पिता ने मोबाइल पर गेम खेलने के कारण

डॉट दिया, तो पुत्र ने जाकर फाँसी लगा ली।” “दसवीं की परीक्षा पास न कर पाने के कारण छात्र ने खुदकुशी कर ली।” “ब्रेकअप हो जाने पर व्यक्ति ने अपनी नस काटकर आत्महत्या कर ली।” इस प्रकार की कई खबरें अखबार में प्रतिदिन आती रहती हैं। कोटा को तो आजकल छात्रों का “सुसाइड पॉइंट” कहा जाता है। छात्र माता पिता के दबाव में आकर कोटा चले जाते हैं, परन्तु रूचि न होने के कारण पढ़ाई कर नहीं पाते। अंत में असफलता के भय के कारण आत्महत्या का रास्ता चुनना ही उचित समझते हैं।

ऐसे कई छोटे-बड़े कारण हैं जो व्यक्ति को आत्महत्या के बारे में सोचने पर मजबूर करते हैं। जैसे - पारिवारिक कलह, बेरोजगारी, तलाक, गरीबी आदि।

आत्महत्या के संकेत -

अक्सर लोग आत्महत्या करने के कुछ क्षण पहले ही ऐसा करने का फैसला लेते हैं। पर यदि व्यक्ति पहले

2023-24

2023-24

से ही इस बारे में विचार कर रहा होता है, तो वह उससे संबंधित कई संकेत प्रदर्शित करता है। ऐसे व्यक्ति अक्सर मरने के बारे में बातें किया करते हैं। उनके व्यवहार में उदासीनता के लक्षण प्रदर्शित होने लगते हैं। वे परिवारजनों एवं मित्रों से दूरी बनाने लगते हैं। लोगों से दूर अकेले रहना पसन्द करते हैं।

ऐसे व्यक्ति जिनमें इस प्रकार के संकेत दिखते हैं उन्हें तत्काल मदद की आवश्यकता होती है। ऐसे समय में उस व्यक्ति को किसी मित्र या करीबी के सहारे की जरूरत होती है।

रोकथाम -

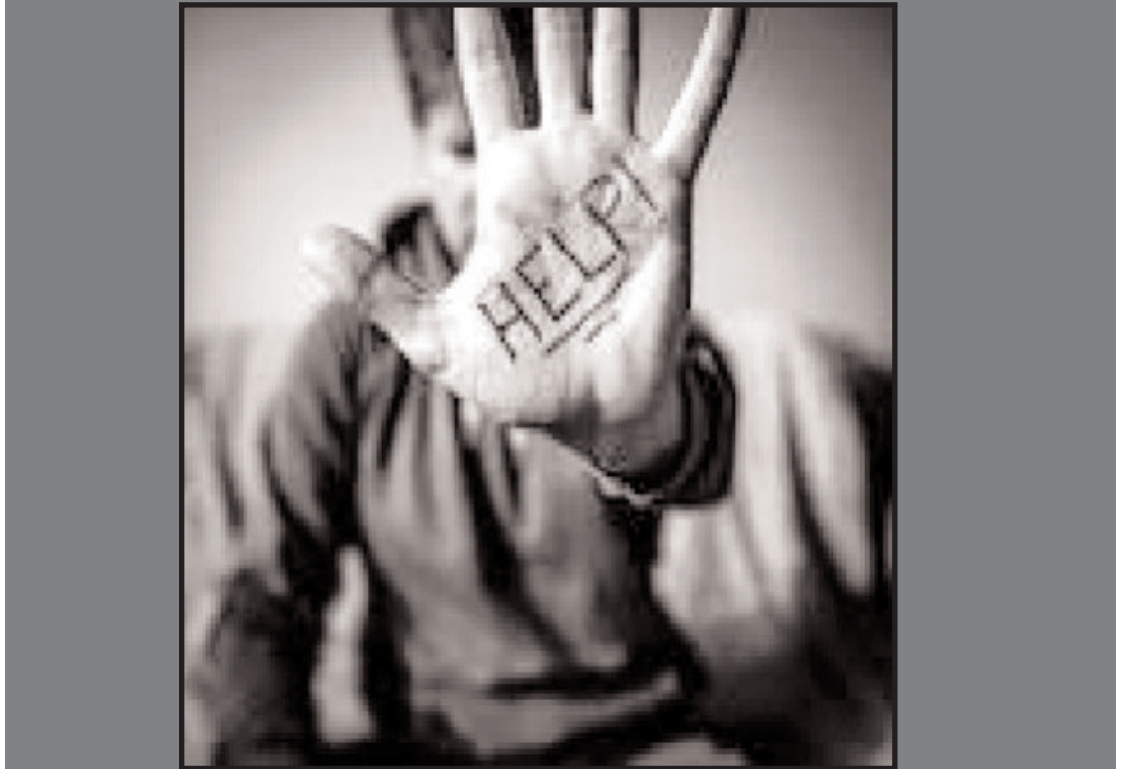
आज विश्वभर में आत्महत्या एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जिसकी रोकथाम हेतु लोगों को जागरूक करना अत्यन्त आवश्यक है। यही कारण है कि लोगों को आत्महत्या के प्रति जागरूक करने के लिए दुनिया में हर साल 10 सितम्बर को विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को आत्मघाती विचारों से मुकाबला करना, अपनी और दूसरों की सहायता

करना, नकारात्मक विचारों से बाहर निकालकर आत्म हत्या के आँकड़ों को कम करना है।

आत्महत्या की भावना कोई स्थायी भावना नहीं होती। अक्सर यह व्यक्ति द्वारा लिया गया तात्कालिक निर्णय होता है। यदि उन पलों में व्यक्ति को किसी अपने की सहायता मिल जाये, तो वह उस स्थिति से निकलकर उस कठिन दौर का सामना करने के काबिल बन सकता है।

आजकल के समय में मित्रता केवल फेसबुक एवं व्हाट्सअप आदि तक ही सीमित रह गई है, लेकिन असल जिन्दगी में व्यक्ति स्वयं को अकेला महसूस करता है। उसे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त नहीं हो पाता। ऐसे में यह आवश्यक है कि व्यक्ति मोबाइल की दुनिया से बाहर निकलकर असल में विश्वासपात्र मित्र बनाये, जिससे वह अपनी भावनाओं को बेझिझक साझा कर सके।

इस प्रकार लोगों को उचित परामर्श एवं निर्देशन देकर आत्महत्या के प्रयास को रोका जा सकता है।



2023-24

वर्षा रस

स्नेह प्रलभ (रामशरण)

रामशरण सेन (एम.एस.डब्ल्यू. तृतीय सेमेस्टर)

2023-24

वर्षा के इस न्यारे मौसम में,
अक्सर ऐसा होता है।
भावो के स्वच्छंद गगन में,
मन पंछी बन उड़ता है ॥
मन न रहता काबू में, भाव
उमड़ कर आते हैं
सर्दी, गर्मी, छोड़ ऋतुराज ही
मन को भाते हैं॥
धानी ऋतु छाती है,
सब उपवन सा लगता है।
हल्की हल्की बूंदों में,
भीग जाने को मन करता है।
मौसम होता यह सबसे प्यारा
सबके मन को भाता है।
छोटे छोटे गड्ढों में भी,
दर्पण उभर सा आता है।
कल-कल करती जल की धारा
गीत नया सुनाती है।
विरहणियों का विरह जगाकर
प्रेम उमड़ा कर जाती है॥
गर्जन करती दामिनी है कली सहम सी जाती है ।
इस स्थिति में याद प्रिया को,
प्रियतम की बड़ी सताती है॥
श्यामवर्ण घनघोर घटा जब,
नीले आकाश में छाती है।
प्रियतम की याद में प्रिया की,
आँखें भर भर आती हैं।
मौसम अद्भुत है वर्षा का,
जीवन में खुशियाँ लाता है।



कल्पना के सागर में मन,
लहर मय हो जाता है ॥
पानी की बूंदों की वर्षा,
मिट्टी में जब पड़ती है।
सौंधी-सौंधी खुशबू इसकी
याद प्रिय की दिलाती है॥
जल में तैरती मछली देख,
जीवन का आनन्द मिलता है।
कीचड़ में जब चलना पड़े
मिट्टी का रंग तब चढ़ता है॥
वर्षा के इस न्यारे मौसम में
अक्सर ऐसा होता है।
भावों के स्वच्छन्द गगन में,
मन पंछी बन उड़ता है॥

2023-24

2023-24

उठ मेरे भारत की बेटी

रामशरण सेन (एम.एस.डब्ल्यू. तृतीय सेमेस्टर)

उठ मेरे भारत की बेटी, शत्रु का संहार कर ।
रूढ़ियों को चीर दे तू, शक्ति का प्रसार कर॥

शत्रु बन के सामने हैं, पुरानी ये कुरीतियाँ ।
रंग, लिंग , भेद भाव, दे रहे चुनौतियाँ ।
रूढ़ियों के शत्रु तेरे, रास्ते में हैं खड़े ।
जंग की घड़ी है आज, क्यों किस से तू डरे ॥
समाज की रण भूमि में, प्रारम्भ अपना वार कर ।
तलवारों को छोड़ दे तू, कलम से प्रहार कर ॥

उठ मेरे भारत की बेटी, शत्रु का संहार कर ।
रूढ़ियों को चीर दे तू, शक्ति का प्रसार कर॥

जो जन्म दे के तुझको, कोसते थे अपनी किस्मतें ।
बदल दे उन कहावतों को, फैला रही जो नफरतें ॥
मिटा दे अपनी मजबूरी, संघर्ष सुबह-शाम कर ।
लांघ कर सीमाओं को, कायम नए आयाम कर ॥
जो तुझ पे हंसते थे, हंस के तू उन्हें सलाम कर ।
शिकायतें करा करें जो, तू याद उनके नाम कर ॥

उठ मेरे भारत की बेटी, शत्रु का संहार कर ।
रूढ़ियों को चीर दे तू, शक्ति का प्रसार कर॥

जो देखते बुरी नजर से, वो नजरें अब झुका दे तू ।
जो बोलते भला बुरा, वो शब्द अब मिटा दे तू ॥
पापियों का नाश कर दे, बनके काली माई तू ।
रण में दौड़े चंडी जैसे, शक्ति अब दिखा दे तू ॥



दौड़ चल अब आगे बढ़, जम के तू प्रतिकार कर ।
कांप जाए दुष्ट बुद्धि, सिंह सा हुंकार भर ॥

उठ मेरे भारत की बेटी, शत्रु का संहार कर ।
रूढ़ियों को चीर दे तू, शक्ति का प्रसार कर ॥
जग को जन्म देने वाली, जननी तू महान है ।
धर्म तेरे रज का है जो, मातृत्व की पहचान है ॥
स्त्री कोई वस्तु नहीं, धरती पे भगवान है ।
स्त्री के वजूद से ही, दुनिया में इंसान है ॥
जिन्दगी का हक अदा तू, बेटियों के नाम कर ।
बेटियों का साथ दे के, बेटी का सम्मान कर ॥

उठ मेरे भारत की बेटी, शत्रु का संहार कर ।
रूढ़ियों को चीर दे तू, शक्ति का प्रसार कर ॥

2023-24



गाँधी

साधना सिन्हा (बी.ए. III सेमेस्टर)

2023-24

एक ऐसे महापुरुष जिनका जन्म दिवस है, आया ।
माता पुतली, पिता करम चन्द, पुत्र महात्मा कहलाया।

आओ मिलकर स्मरण करें हम बापू की गाथाओं का।
जिसने गोरे नस्ल वालों से इस मातृभूमि को बचाया था।

सादा भोजन, सादा जीवन, सादा धोती पहनावा था।
सत्य, अहिंसा पथ पर चलते कोई न उनमें दिखावा था।

चरखा चलाकर सूत कातते, खादी को शान बताया था।
विदेशी का बहिष्कार कर, स्वदेशी को अपनाया था।

सन् 1920 में आन्दोलन असहयोग चलाया था।
नमक बनाकर तोड़ा कानून, अहिंसा का मार्ग दिखाया था।
आओ मिलकर.....

200 साल तक अंग्रेजों ने भारत के चूल्हे पर रोटी सेकी।
धन धान्य से पूर्ण भारत ने तब इतनी तंगी देखी।
लेकर लाठी चले अकेले, बापू ये न देख सके।
फिरंगियों को भारत से फेंका, हम तो कूड़े में कचरा न फेंक सके।

इसी गाँधी ने भारत को शांति का पाठ पढ़ाया था ।
अंग्रेजों अब भारत छोड़ो सन् 42 में नारा लगवाया था।

सत्य के पुजारी जिनका कर्म पर विश्वास था ।
स्वतंत्र कराया उस भारत को जो ब्रिटेन का दास था।

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई को आपस में मिलवाया था।
कभी न चाहा देश विभाजन, भाई चारा सिखलाया था।

हिन्दू मुस्लिम में फूट पड़ी, अंग्रेजों ने जाल बिछाया था।
भारत खण्डों में टूट गया, बापू पर दोष लगाया था।
आओ मिलकर

की जिन्होंने दाण्डी यात्रा, किए अनेक सत्याग्रह।
कई बार वो जेल गए, और अंग्रेजों को झेल गए।

आजादी के लिए लड़े न कोई हथियार उठाया था।
अहिंसा और प्रेम को श्रेष्ठ हथियार बताया था।

विंस्टन चर्चिल ने बापू को नग्न फकीर पुकारा था।
आओ मिलकर

युद्ध कठिन था, अंग्रेजों की फौज बड़ी थी इतनी।
यदि अहिंसा मार्ग न होता, बस बिछती लाशें दिखतीं।

गाँधी के एहसानों को भारत कभी भुला न पाएगा।
भगत को फाँसी, भारत खण्डन, जाने कब तक दोष लगाएगा।

आजाद तिरंगा जिस गाँधी ने भारत में लहराया था ।
उस गाँधी को भारत ने ही, गोलियों से उड़ाया था।
आओ मिलकर

2023-24

2023-24

मतदान त्यौहार

हरीश कुमार साहू (बी.ए. तृतीय वर्ष)

आज भी एक त्यौहार है ।
मतदान करना अपना अधिकार है।

न जाति से, न धर्म से मेरा मत,
उसके अच्छे कर्म से।

देश को दिलाए एक नई उड़ान,
करें उसी को अपना मतदान।

मन में रख सवाल हजार,
कौन करेगा देश का उद्धार?

मतदान अपना अधिकार,
पांच साल तक रहेगी अपनी ही सरकार।

फिर देश की सरकार को न कहना
नेता भ्रष्टाचारी है,

सोच समझ कर करना मतदान,
वोट उसी को जो इसका हकदार है।

किसी और को देख के नहीं कि
उसने क्या चुना है,
जो दिलाए देश को नई पहचान,
उसे ही वोट देना है।



इस कुर्सी पर किसे बैठाना है,
इसका चुनाव हमें ही करना है।
जो देश के प्रत्येक नागरिक के
मुश्किल में है साथ,
अपनी पसंद से चुने सरकार यह अपने हाथ।

जब न आए कोई उम्मीदवार पसंद,
बटन दबाना नोटा पर,
लेकिन मतदान अवश्य करें यह अपना है अधिकार ।
आज भी एक त्यौहार है,

मतदान करना अपना अधिकार है।

2023-24



Jone Fosse - Nobel Laureate in English Literature

Ms. Ranjeeta Rani
Research Scholar

Jon Olav Fosse, a Norwegian author, translator and playwright is the recipient of Nobel prize for his innovative plays and prose which gave voice to the unsayable. Born on September 29, 1959, in the coastal town of Haugesund, in the west coast of Norway, his literary contribution has left indelible mark in the literary world by writing in a style which shows profound exploration of human existence, inner turmoil, and the human condition.

Fosse's literary adroitness lies in

his ability to capture the essence of the human experience with a minimalist yet profound style. His works, often characterized by spare language and introspective narratives, resonate deeply with readers across the globe. He is internationally acclaimed for his unique narrative approach and poetic sensibility.

His exploration of themes like loneliness, identity crisis and the human condition transcends cultural boundaries, making his works universally relevant.

His notable novels, plays, and poems

2023-24

2023-24

2023-24

delve into the complexities of human relationships, shedding light on the raw emotions and inner turmoil that define our existence. His writing style and his way of depiction is undeniably close to the reader and strikes notes with them.

His adeptness to portray the profound and the mundane into evocative prose has earned him a respectable place among the literary giants of our time.

The Nobel Prize in Literature awarded to Jon Fosse acknowledges his exceptional craftsmanship in drafting thought-provoking, emotionally charged narratives that continue to enrich the contemporary literature. Fosse's work serves as a testament to the power of words to illuminate the human soul and will undoubtedly inspire generations of readers and writers to come.

Fosse's literary career took flight in the 1980s when he began publishing novels, plays, and poetry. His writing style is characterized by its minimalist and introspective nature. His use of sparse, poetic language, coupled with a relentless focus on the inner thoughts and emotions of his characters, distinguishes him from his contemporaries.

The influence of the works of the Austrian playwright and novelist Thomas Bernhard, Norwegian playwright Henrik Ibsen, Irish Novelist and poet James Joyce and German-speaking bohemian writer

Franz Kafka are evident in Fosse's writing, yet he adds his unique Norwegian sensibility and a distinctive, almost meditative quality to his prose. Jon Fosse's writing has also been the subject of academic study and critical analysis, with scholars exploring the depth and complexity of his narratives.

His first novel was published in 1983. By the mid-1990s, his admiration had risen many folds in Europe; yet it took another decade for him to appear on the Anglophone horizon.

He writes in Nynorsk (a literary form of Norwegian writing based on country dialects and constructed in the 19th century as a national-language alternative to Danish). All his works are translated in English so some credit goes to the translator too who puts his thoughts in erstwhile Nynorsk while translating it into English. In present time more attention has been paid to the translated works. It ultimately provides a platform for global voices at a time of interwoven politics and economies,

Melancholy, published in 2006, became Fosse's first foray into the North American market and Dalkey was the first press in the world to publish the Norwegian author in English. Over the next 18 years, Dalkey went on to publish six more books by Fosse.

Fosse has been translated into

2023-24

more than 50 languages and has won many of the world's prestigious literary prizes. Unsurprisingly, for the past decade, he has been considered a top contender for the Nobel Prize.

One of the most celebrated works of Fosse is **Septology**, known as Heptalogy in English is made up of seven novels in three books, a series of novels including titles like "The Other Name", "I is Another" and "Out of the World". Published in a single volume, it is arguably Fosse's magnum opus. It tells the story of the aging painter Asle, a widower, who over the course of seven days tries to make sense of religion, identity, art, and family life, with strong autobiographical undercurrents, including a literary tribute to Fosse's late first wife and his own work as a painter. Fosse's exploration of Asle's inner world, his struggles with identity, love, and mortality, is a profound examination of the human experience. The novels employ Fosse's characteristic minimalist prose, creating an atmosphere of existential contemplation and a sense of quiet desperation.

Apart from his novels, Jon Fosse has substantially contributed to the world of theatre. His plays, such as "Someone is Going to Come" and "I Am the Wind," have received critical acclaim and have been performed on stages worldwide.

Fosse has number of awards and honours

to his credit, corroborating his contributions to literature. In 2010, he was awarded the International Ibsen Award, a prestigious recognition in the world of theatre. In 2015, he received the Nordic Council Literature Prize, cementing his status as one of Scandinavia's most influential contemporary authors. His works have been translated into over forty languages, making his insights and contemplations accessible to readers worldwide.

Jon Fosse's literary contributions have earned him a place of distinction in the world of contemporary literature. His unique narrative style, characterized by his minimalist prose and intense introspection, allows readers to delve into the depths of the human psyche. Fosse's exploration of themes like loneliness, identity crisis and the human condition transcends cultural boundaries, making his works universally relevant. His profound examination of human existence, and his ability to evoke deep emotions in his readers make him a literary luminary whose works will continue to resonate for generations to come.

Work cited

<https://scpsassam.org/celebrity/celebrity-news/jon-fosse/>

www.rochester.edu

https://en.wikipedia.org/wiki/2023_Nobel_Prize_in_Literature

000

2023-24

2023-24

2023-24

Words of an Alumna

Parul Pandey

Alumna

Hey there! You are enjoying the most beautiful days of life- The College Days. We learn and unlearn many things by meeting new people from different places. I am grateful that I have studied from this college, a place which makes you feel like family. And I know you all must be feeling the same. The juniors of 'my department'- Department of English, when you will complete your masters, you are going to be a different personality, more confident and much stronger. Our learned professors will not only inspire you in the class but their knowledge will keep inspiring you throughout the life. Once you complete your masters in English literature the common perception is that you have to become a teacher. Most of us join B.Ed course and wait for the teaching vacancies. But there are many fields to explore. After doing your Post Graduation in English you can become a freelance writer, someone who doesn't work for any company but is open for any writing purpose given by anyone. One can demand the payment according to



2023-24

his/her wish. English is a global language and most of the social media website use it for writing captions. So, social media account manager becomes a good career opportunity for us. Every organization wants to create good reputation with all its local, national and international clients and for this they need Public Relations Officer.

An English graduate becomes the best option for them to hire. In today's world of social media, you can also opt for becoming a full-time blogger or a youtuber as your English will help you reach larger audience than the others. Gone are the days when only engineers



were given jobs in MNCs but now if you have done a certificate course of trending computer language while doing your PG or after PG you can also give interviews for the posts that demands proficiency of that language. You can join the HR Department of the MNC too. Joining an

NGO and serving people is always an option.

After your PG if you want to continue your studies and you are interested in doing research you can join Ph.D. To get admitted in Ph.D you have to clear entrance exam of the university or you have to clear NET/SET examination. Ph.D is a compulsory educational qualification to become an assistant professor in univer-

sities. Having a clarity while doing P.G will help you get a job smoothly. I hope you all are adding proficiency courses to your resume to have a broader opportunity for your future...

All the Best

000

2023-24

2023-24

2023-24

संवेदन शून्यता

प्रतिभा श्रीवास्तव

प्रयोगशाला तकनीशियन

मैं अपने पारिवारिक कार्य से बिलासपुर जा रही थी। हम पाँच सात लोग साउथ बिहार ट्रेन से जा रहे थे हम सब अपनी अपनी बातों में मशगूल थे कब दुर्गसे रायपुर आ गया पता ही नहीं चला। हम लोगों का ध्यान तब भंग हुआ जब ट्रेन रूकी और बहुत से बच्चे हो हल्ला करते हुए ट्रेन में चढ़कर अपनी अपनी सीट के लिए चहलकदमी करने लगे। हमने आपस में कहा कि लगता है कि रायपुर का स्टेशन आ गया है। करीब दस पन्द्रह मिनट रुकने के बाद ट्रेन बिलासपुर के लिए रवाना हो गई। सभी बच्चों की उम्र लगभग 12-13 वर्ष की रही होगी। पूछने पर उन्होंने बताया कि वे बैडमिन्टन खेलने बिलासपुर जा रहे हैं।



ट्रेन में काफी भीड़ थी।

बच्चों के बैठने की जगह नहीं बन पा रही थी। इतने में मेरे पीछे दाहिने सीट पर बैठे एक सज्जन बच्चों से कह रहे थे कि देखो वो सामने की सीट पर जो अंकल सो रहे हैं उन्हें उठाओ और तुम सब वहाँ पर बैठ जाओ। मेरा भी ध्यान सामने की सीट पर गया जहाँ पर वे सज्जन अधलेटे से मोबाइल देखकर रहे थे। मुझे भी बहुत आश्चर्य हुआ कि ये कैसे सज्जन हैं? इतने बच्चों को देखकर भी अनजान बने हुए हैं। तब मैंने भी बच्चों को इशारा किया कि आप लोग उनसे बात करो और सीट पर बैठ जाओ।

तब बच्चों ने साहस कर उनसे कहा अंकल आप थोड़ा हट जाइए। हमें भी बैठना है। तब उन सज्जन ने गर्दन उठाते हुए कहा - अभी तुम्हारी खड़े होने की उम्र है ऐसे ही खड़े रहो, अभी नहीं खड़े रहोगे तो क्या सीखोगे? और पुनः वैसे ही फिर मोबाइल चलाने लगे।

मुझे उनके स्वार्थीपन और निर्दयता पर बहुत गुस्सा आया। मैंने सोचा कि मैं उनसे कहूँ कि आप बच्चों को जगह दे दीजिए, रायपुर से बिलासपुर जाने में कम से

कम दो घंटे लग जाते हैं इतनी देर में बच्चे थक जाएँगे। बच्चों को वहाँ जाकर तुरन्त खेलना है वहाँ पर भी इन्हें बैठने का समय नहीं मिलेगा। आप अपनी खुदगर्जी छोड़कर इन्हें बैठने दीजिए। लेकिन मैं केवल सोचती ही रही, बोल नहीं पाई। मैं भयभीत थी कि मेरे बोलने पर भी वह ढीठ बना रहेगा और मुझसे झगड़ने लगेगा तब आसपास के लोग मेरा मजाक बनायेंगे - कि बड़ा परमार्थ करने चली थी क्या हुआ? कुछ हुआ?

मैं रास्ते भर उन बच्चे की थकावट महसूस कर रही थी लेकिन मैं अंत तक कुछ भी नहीं कह पाई। मेरे मन में संवेदना शून्यता की कसमसाहट बनी रही और रह रह कर एक बात मन में और आ रही थी कि हम सब बोलते रहते हैं कि आजकल के बच्चों की

संवेदना मर चुकी है उस संवेदनाहीनता के लिए हम भी तो जवाबदार हैं।

जब जब मुझे वह घटना याद आती है तब लगता है मेरे जैसे कई लोग अपने चारों ओर की अनेक घटनाओं को नजरअंदाज करते रहते हैं और ऐसा करते करते उनकी संवेदना शून्य होती जा रही है। लेकिन जब उनके साथ भी ऐसी कोई घटना घटती है तो वे बिलख बिलख कर कभी शासन को, कभी समाज के लोगों को, कभी सभी को दोष देते हुए मिल जाते हैं और एक संवेदनशील व्यक्ति के लिए तरस जाते हैं।

वर्तमान में आपको आधुनिक तकनीक से लैस सभी साधन मिल जायेंगे या आप खरीद सकते हैं लेकिन क्या आपको एक भी ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो आपसे निस्वार्थ संवेदना रखता हो। आज हम सभी ऐसे व्यक्ति को तरस रहे हैं जो हमारे लिए बोले, हमारे लिए लड़े, हमारे लिए खड़े हो, क्योंकि हम ही चुप रहना सीख गये तो सबसे कैसे उम्मीद कर सकते हैं?

000

2023-24

मेरे जीवन का अविस्मरणीय पल

संस्मरण

हमारे जीवन में कई प्रकार की घटनाएँ रोज़ घटित होती हैं। किन्तु कई घटनाएँ ऐसी होती हैं जिन्हें यदि भूलने की कोशिश भी की जाए तो भूल नहीं सकते। कई यादें ऐसी होती हैं जिन्हें याद करने पर दुख होता है लेकिन कई यादें ऐसी होती हैं, जिन्हें बार-बार याद करने का मन करता है।

मेरे जीवनकाल में एक ऐसी ही मज़ाकिया घटना घटित हुई, जिसको सुनकर सभी को हँसी आ जाएगी। यह उस समय की घटना है जब मैं दसवीं कक्षा में थी। परीक्षा का समय था, अंतिम महीनों में प्रोजेक्ट दिये गये थे, जिन्हें जमा करना अनिवार्य था। मुझे हमेशा से कुछ अलग करने की आदत थी, इस कारण मेरा प्रोजेक्ट भी देर से बनता था। प्रोजेक्ट जमा करने का अंतिम दिन था। मैं



सुबह-सुबह जल्दी तैयार होकर अपने सायकल में टिफिन-बॉटल लेकर स्कूल की तरफ चली गई लेकिन एक बहुत आवश्यक सामान भूल गई।

मेरी मम्मी ने सोचा कि मैं दुकान जा रही हूँ, तो उन्होंने भी मुझे कुछ नहीं कहा। मैं सायकल चलाते हुए मन में ये सोच रही थी कि आज कौन-सा प्रोजेक्ट वर्क जमा करना है, कौन सा टेस्ट है...

इन बातों की चिन्ता में मैं खोई सी थी। रेलवे स्टेशन के पास मेरी एक दोस्त मिली जिसने मुझसे पूछा, 'आज तू बैग नहीं लाई?' तब मुझे एहसास हुआ कि मेरी पीठ में तो बैग ही नहीं है। मैं बहुत घबराने लगी, क्योंकि घर बहुत दूर था, स्कूल के लिए भी देर हो रही थी। तब मैंने

सोचा स्कूल ही जाती हूँ, कुछ करना होगा तो वहीं करूँगी। जब स्कूल गयी तो प्रिंसिपल मैडम से सारी बातें शेयर की तभी प्रिंसिपल मैडम का ध्यान मेरे टिफिन और बॉटल पर पड़ा, उन्होंने मज़ाक से कहा कि, टिफिन नहीं भूली और वो भी हँसने लगीं। तब मैंने अपनी मम्मी को फोन लगाया, थोड़ी देर बाद उनसे संपर्क हुआ और वो समझ गई कि मुझे बैग चाहिए तभी वो सारे काम छोड़कर

सायकल से बैग लेकर मेरे स्कूल पहुँची। सारे बच्चे मेरी मम्मी को बैग लाते हुए देखकर मेरा मज़ाक बनाने लगे। 'कोई बैग कैसे भूल सकता है?' लेकिन मेरी मम्मी को मेरी चिन्ता और परेशानी का पता था, उन्होंने मुझे डाँटा पर प्यार से, यही तो है माँ का प्यार, जो कोई नहीं समझ सकता वो माँ समझती है।

2023-24

आदिवासी लोकजीवन एवं संस्कृति

मनीष सिन्हा

बी.एससी. तृतीय सेमेस्टर (CBZ)



व्यक्त की है। 1930 तथा 1940 के दशकों में बीस वर्षों तक गोण्ड लोगों के साथ निवास करने वाले ब्रिटिश मानव विज्ञानी वेरियर एल्विन ने अपनी पुस्तक “ट्राईबल आर्ट ऑफ मिडिल इंडिया” में लिखा है कि भारत के जनजातीय क्षेत्रों में जगह-जगह पर आधुनिक स्कूल खोले जा रहे हैं और उन्होंने कहा कि इस बात का खतरा है कि आदिवासियों को पुराने जीवन को छोड़ने के लिए विवश किया जाएगा और उनके स्थान पर इस बात की नगण्य जानकारी दी जाएगी कि किस प्रकार सामंजस्य तथा जीवंतता,

भारत के आदिवासियों का इतिहास आर्यों के आगमन से पूर्व का है। कई युगों तक इस उपमहाद्वीप के पहाड़ी भूभागों में उनका आधिपत्य था। परन्तु समय के साथ पढ़े लिखे लोगों ने उन लोगों पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया जिनकी परम्पराएं मौखिक संस्कृति पर आधारित थी। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत या 104 मिलियन लोग आदिवासी है। मध्य भारतीय राज्य मध्यप्रदेश में बड़ी संख्या में जातीय जनजातियाँ हैं। विश्व के 90 से अधिक देशों में आदिवासी समुदाय के लोग रहते हैं। दुनिया में आदिवासी समुदाय की आबादी लगभग 37 करोड़ है जिस में लगभग 5000 अलग-अलग आदिवासी समुदाय है और उनकी लगभग 7 हजार भाषाएँ हैं। आदिवासियों को अपने अस्तित्व, संस्कृति और सम्मान को बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। आज पूरे विश्व में नस्लवाद, रंगभेद, उदारिकरण जैसे कई कारणों से आदिवासी समुदाय को बचाने के लिए संघर्ष हो रहे हैं।

कई विद्वानों ने इसके बारे में अपनी चिन्ता भी

उल्लास, आनन्द प्राप्त किया जाए।

आदिवासी का अर्थ -

आदिवासी शब्द दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है। आदि का शाब्दिक अर्थ प्रारम्भ या शुरु होता है एवं वासी का अर्थ निवास करने वाला होता है, अर्थात् जो प्रारम्भ या शुरु से निवास करता है, अर्थात् आदिवासी का शाब्दिक अर्थ मूलवासी होता है।

आदिवासी भारत वर्ष की वास्तविक स्वदेशी उपज है जिनकी उपस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति विदेशी हैं। ये वे प्राचीन लोग हैं जिनके नैतिक अधिकार और दावे, हजारों वर्ष पुराने हैं।

आदिवासी लोक जीवन -

आदिवासी समुदाय प्रकृति के सभी घटकों - पेड़, पौधे, धरती, सूर्य, नदियों और पहाड़ों का सादर वंदन और पूजा करते हैं, ये जल-जंगल के बेहद करीब होते हैं और पावन धरती को अपनी माँ समान मानते हैं। इनका मुख्य पेशा ज्यादातर खेती किसानी से जुड़ा होता है। ये जल जंगल को अपना रखवाला मानते हैं इसलिए वे इसकी रक्षा करते हैं।

2023-24

आदिवासी व्यक्तिगत तरक्की पर समुदायिक भलाई को प्राथमिकता देते हैं, एक दूसरे का सहयोग करते हैं। इकट्ठा रहते हैं। प्रकृति के अनुसार जीवन जीते हैं और धन बटोरने को पसन्द नहीं करते हैं।

आदिवासी निजी संपत्ति में विश्वास नहीं करते हैं, इसलिए इसमें निजी स्वामित्व की कोई अवधारणा नहीं है, लाभ या जमाखोरी की कोई अवधारणा नहीं है। वे साझा स्वामित्व, साझाकरण और देखभाल में विश्वास करते हैं। भले ही किसी परिवार के पास एक किलोग्राम चावल हो,

लेकिन अगर उसके पड़ोसी के पास भोजन नहीं है तो वे उसे पड़ोसी के साथ साझा करेंगे। यदि किसी बच्चे को समुदाय में किसी के पास छोड़ दिया जाता है, तो महिलाएँ उसकी अपने बच्चे की तरह देखभाल करेंगी, यहाँ तक कि आवश्यकता पड़ने पर बच्चे को स्तनपान भी कराएँगी।

जब आदिवासी जंगल से शहद इकट्ठा करते हैं तो वे उसका हर टुकड़ा नहीं लेते, बल्कि कुछ भालू और पक्षियों के लिए छोड़ देते हैं, जब वे जड़ें एकत्र करते हैं तो वे सुनिश्चित करते हैं कि एक टुकड़ा पुनर्जीवन के लिए छोड़ जाए।

आज अधिकांश जंगल काट दिए गए हैं और उनकी जगह सागौन, नीलगिरी और बबूल के बागान लगा दिए गए हैं, जिनमें न तो पक्षियों और जानवरों के लिए कोई फल होता है, न ही चारा, और न ही जैव विविधता में कोई योगदान होता है। लेकिन वन विभाग सौर बाड़ लगाने और हाथी खाई खोदकर वृक्ष रोपण की सुरक्षा के लिए बहुत पैसा खर्च करता है। वे आदिवासियों को जंगल और जानवरों से भी दूर रखते हैं।

कुछ आदिवासियों का ईसाई धर्म में परिवर्तन कुछ लोगों के लिए चिन्ता का विषय है, उन्होंने अपनी इच्छा से ऐसा किया है, किसी दबाव या प्रलोभन के कारण नहीं। जब



बीमारी, घरेलू हिंसा और शराब की लत जैसी प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा तो कभी-कभी कुछ लोगों ने चर्च में प्रार्थना की और जब उनकी समस्याएँ हल हो गईं, तो उन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया।

आदिवासी संस्कृति

अधिकांश आदिवासी, संस्कृति के प्राथमिक धरातल पर जीवनयापन करते हैं। वे सामान्यतः क्षेत्रीय समूहों में रहते हैं और उनकी संस्कृति अनेक दृष्टियों से स्वयंपूर्ण रहती है। इन संस्कृतियों में ऐतिहासिक जिज्ञासा का अभाव रहता है तथा ऊपर की थोड़ी ही पीढ़ियों का यर्थाथ इतिहास क्रमशः किंवदंतियों और पौराणिक कथाओं में घुल मिल जाता है।

आदिवासियों के आख्यान उनके मिथक, उनकी परम्पराएं आज इसीलिए महत्वपूर्ण नहीं हैं कि वे बीते युगों की कहानी कहती हैं, बल्कि उनकी अपनी संस्थाओं और संस्कृति के ऐतिहासिक तर्क और बौद्धिक प्रसंगिकता के लिहाज से भी महत्वपूर्ण हैं। उनकी कलात्मक अभिव्यक्तियाँ, सौन्दर्यात्मक चेष्टाएँ और अनुष्ठानिक क्रियायें हमारी कला-संस्कृति की तरह आराम के क्षणों को भरने वाली चीजे नहीं हैं, उनकी पूरी जिन्दगी से उनका एक क्रियाशील, प्रयोजनशील और पारस्परिक रिश्ता है, इसलिए

2023-24

2023-24

2023-24



उनकी संस्कृति एक ऐसी अन्विति के रूप में आकार ग्रहण करती हैं जिनमें उनके जीवन और यर्थाथ की पुनर्चना होती है।”

आदिवासी सामाजिक जीवन व्यवस्था

आदिवासी समाज भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनकी जीवनशैली और संस्कृति अनूठी है और उन्होंने अपनी परम्परा ज्ञान, नृत्य, संगीत, कला और विज्ञान में अमूल्य धरोहर बनाई है। वे अपनी भूमि के साथ सांगठित रूप से जुड़े रहते हैं और प्रकृति के साथ एक सामंजस्य पूर्ण रिश्ता बनाए रखते हैं। उनकी संवेदनशील और सामाजिक संरचना में व्यवस्था के कारण वे प्रकृति का अच्छे रखवाले हैं और संतुलित पर्यावरण की रक्षा करते हैं।

अधिकांश आदिवासी संस्कृति के प्राथमिक धरातल पर जीवनयापन करते हैं। वे सामान्यतः क्षेत्रीय समूहों में रहते हैं और उनकी संस्कृति अनेक दृष्टियों से स्वयंपूर्ण होती है। उन संस्कृतियों में ऐतिहासिक जिज्ञासा का अभाव रहता है तथा ऊपर की थोड़ी ही पीढ़ियों का यर्थाथ इतिहास पौराणिक कथाओं में घुलमिल जाता है।

1. आदिवासी का रहन-सहन सरल है, उनका आवास आमतौर पर पत्थर, मिट्टी, पेड़ की लकड़ियों एवं कुछ समृद्ध जनजातियों का आवास रेत, अधिकांश शहरी क्षेत्रों में पत्थर, ईंट से बना पक्का मकान है।

2. वे लोग त्योहारों के दौरान पत्तों तथा फूलों से बने हुए वस्त्र पहनते हैं। वे जीविकोपार्जन के लिए जंगल पर निर्भर होते हैं। वे जंगल से लकड़ियाँ, पत्ते, गोंद, शहद

आदि इकट्ठा कर उन्हें बेचकर अपना जीविकोपार्जन करते हैं, वे लोग काशा, मिट्टी, लकड़ी, बास से कई उपयोगी वस्तुएं बनाते हैं।

आदिवासियों की राजनीतिक व्यवस्था - एक नकारात्मक अर्थ साथ और एक राजनीतिक संदर्भ में, जनजातीयवाद का अर्थ समूह के अंदर की वफादारी के आधार पर बाहरी समूहों के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार या दृष्टिकोण भी हो सकता है।

प्रत्येक जनजाति की अपनी राजनीतिक व्यवस्था होती है। जनजातीय प्रमुख आमतौर पर अन्य सदस्यों पर अधिकार का प्रयोग करता है। मुखियापन सामान्यतः वंशानुगत होता है। आदिवासी समाज में उनका महत्वपूर्ण स्थान है।

आदिवासी लोगों को अपना अस्तित्व, संस्कृति और सम्मान बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है इस जनजाति को संरक्षण और बढ़ावा देने के लिए उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए शिक्षाविदों, लोगों और सरकारी संस्थानों को उनके अधिकारों को समझने और समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

विश्व आदिवासी दिवस एक अवसर है जब हम समाज में समानता की बात करते हैं। आदिवासी समुदाय के सदस्य भी समाज का एक अभिन्न हिस्सा है, इसलिए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 9 अगस्त 1982 को आदिवासियों



2023-24

के हित में एक विशेष बैठक आयोजित की गई थी। तब से जागरूकता बढ़ाने और दुनिया की स्वदेशी आबादी के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस (वर्ल्ड ट्राईबल डे) मानाया जाता है।

आदिवासियों का आर्थिक जीवन : भारत में जनजातीय अर्थव्यवस्था के चार प्रमुख क्षेत्र, कृषि, पशुचारण, हस्तशिल्प निर्माण और औद्योगिक श्रम हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का प्रमुख योगदान है। कृषि उत्पादों का व्यापार पूरे देश के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होता है।

जनजातियाँ कृषि, खनन और पर्यटन सहित गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था विकसित करती है। कुछ आदिवासी राष्ट्र अपने जल अधिकारों की मात्रा निर्धारित करके, पानी पहुँचाने के लिए बुनियादी ढाँचे का विकास करके और राजस्व अर्जित करने के लिए आदिवासी पानी को पट्टे पर देकर आर्थिक विकास करते हैं।

आदिवासियों का धार्मिक जीवन - आदिवासी प्रकृति पूजक हैं और वन, पर्वत नदियों एवं सूर्य

की आराधना करते हैं। मूल रूप से आदिवासियों का अपना धर्म है। ये शिव एवं भैरव के अलावा इनके अपने अलग लोक देवता, ग्राम देवता और कुल देवता है।

वे लोग किसी विशेष प्रकार के जादू-टोने में कुशल नहीं होते परन्तु इसके जानकार होते हैं कभी-कभी आकस्मिक रूप से किसी राक्षस या पिशाच से प्रभावित हो जाने पर या किसी उन्माद की अवस्था में असम्बद्ध भाव व्यक्त करने लग जाते हैं जिन्हें भविष्यवाणी की संज्ञा दे दी जाती है।

आदिवासी लोकगीत एवं नृत्य - हर मौसम के अनुसार इनके पास लोकगीतों की धरोहर है इनका मानना है कि मौसम के अनुकूल नृत्य -संगीत एवं रागों के अलाप से प्रकृति खुश होती है। वर्षा अच्छी होती है। उनकी फसल अच्छी उपजती है और उन्हें शक्ति मिलती है। इनमें पर्यावरण के प्रति सजगता है और प्रकृति के प्रति जीवंत लगाव है। इनके पास गीतों और नृत्यों की भरपूर सम्पदा है जिसमें प्रकृति को संरक्षित करने की बात की जाती है। इनके गीतों में पशु-पक्षियों, जंगल, जमीन का जिक्र भी है। ये इसे अपने परिवार समान मानते हैं, नृत्यों और लोकगीतों

के माध्यम से इनकी आकांक्षाओं उल्लास की अभिव्यक्ति सहज भाव से परिलक्षित होती हैं। कुछ संरक्षित लोकगीत एवं नृत्य - संताल नृत्य, चेराव लोकनृत्य, छरू धीमसा, भगोरिया नृत्य, भुंडारी नाच, उरांव नाच इत्यादि।

आदिवासियों की भाषा - हर समाज समुदाय की अपनी भाषा होती है जो उस समाज की सभ्यता और संस्कृति को दर्शाती है वैसे ही



2023-24

भारत में भी सभी आदिवासी समुदायों की अपनी विशिष्ट भाषा है जो उनकी संस्कृति, परम्परा और सभ्यता को दिखाती हैं। भारत की 144 मुख्य भाषाओं में से 22 को ही संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है इसमें हाल-फिलहाल शामिल की गयी संताली और बोड़ों ही मात्र आदिवासी भाषा है।

विशेष - 1. आदिवासी खाद्य पदार्थों में उबले हुए भोजन जैसे चावल, दाल, साग, कंदमूल और औषधिक गुण भोजन और मांस कभी कभी पशु पक्षी का मांस भूज कर विशेष अवसरों पर खाते हैं ।

2. दिनभर काम करने के बाद शाम को मनोरंजन करने के लिए महिलाओं एवं पुरुषों द्वारा नाच-गाना कर एवं मंडली द्वारा कीर्तन करने की परम्परा है।

3. आदिवासियों को पारम्परिक दवाओं का व्यापक ज्ञान है। और वे जड़ी-बूटियों , जड़ों और पेड़ों की छालों का उपयोग करके बीमारियों का इलाज करते हैं ।

4. आदिवासी समाज तीन संस्कारों को प्रमुखता से मानते हैं, जन्म, विवाह, और मृत्यु बाकी संस्कारों को इन्हीं तीन संस्कार में शामिल कर लिया जाता है ।

मूल्यांकन - अपनी जमीन और जंगलों से बिछड़ने पर आदिवासी समुदाय आजीविका और भोजन के अपने मुख्य स्रोतों से वंचित हो जाते हैं। अपने परम्परागत निवास स्थानों के छिनने जाने की वजह से बहुत सारे



आदिवासी काम की तलाश में शहरों की ओर रूख कर रहे हैं। वहाँ उन्हें छोटे-मोटे उद्योगों में, इमारतों में या निर्माण स्थलों पर बहुत मामूली वेतन वाली नौकरियाँ करनी पड़ती हैं। इस तरह वे गरीबी और लाचारी के जाल में फँसते चले जाते हैं ।

आदिवासियों को जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं प्रकृति से उपलब्ध हो जाती हैं। जनजाति समाज के लिए शासन द्वारा शिक्षा, रोजगार एवं लघु उद्योग जैसी सुविधायें उपलब्ध करायी जा रही हैं जिससे लोगों को प्रकृति से निकटता एवं भौतिक वस्तुओं की उपलब्धता प्राप्त हो ।

प्रकृति है जननी हम सब की
इससे गहरा जिसका नाता है।
हर जीव का कल्याणकारी ही,
आदिवासी कहलाता है।।”

- मंयक विश्नोई



आदिवासी कोई 'धर्म' नहीं है
आदिवासी एक सभ्यता है।
एक संस्कृति हैं
पूरी तरह 'प्रकृति' पर निर्भर ॥

- एस.म. कुवर

000

2023-24

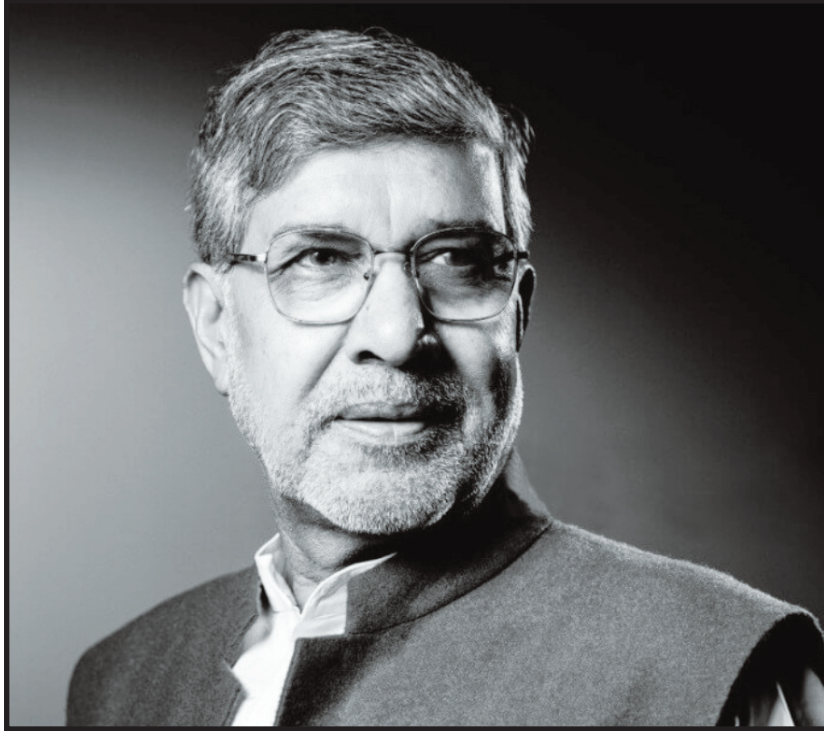
कैलाश सत्यार्थी मानव स्वतंत्रता और अच्छाई के प्रबल समर्थक रामकिशोर वस्त्रकार (अतिथि शिक्षक इतिहास)

प्रारंभिक जीवन :- कैलाश सत्यार्थी के बचपन का नाम कैलाश शर्मा था उनको सुरेन्द्र नाम से भी पुकारा जाता था। 11 जनवरी 1954 को मध्यप्रदेश के विदिशा जिले में उनका जन्म हुआ इनके पिता का नाम रामप्रसाद शर्मा था, जो पुलिस में सिपाही के रूप में कार्यरत थे, माता का नाम चिरौंजी बाई था इनकी पत्नी का नाम सुमेधा था। जिससे इन्होंने 1975 में प्रेम विवाह किया था। इनकी पत्नी ने विभिन्न कार्यों में इनका बखूबी से साथ निभाया।

अपना नाम कैलाश शर्मा से कैलाश सत्यार्थी की बात बताते हुए वे कहते हैं कि की “ब्राह्मण परिवार में जन्म होने से उन्होंने देखा कि उनके परिवार के लोग समाज के अन्य लोगों से छूआछूत मानते थे। गांधी जी से

प्रभावित कैलाश शर्मा जी ने विदिशा में गांधीवादी विचार को माननेवाले नेताओं को भोज पर आमंत्रण किया। यहाँ भोजन दलित महिलाओं ने बनाया था। कैलाश शर्मा कहते हैं - कि उस भोज में कोई नेता या व्यक्ति खाना खाने नहीं आया जो नेताओं व समाज के अन्य वर्ग के लोगों की कथनी और

करनी में अन्तर को स्पष्ट करता है। भोज में नेताओं के न आने का कारण दलित महिलाओं के द्वारा खाना पकाना था। तो इस छूआछूत, ऊँच-नीच की स्थिति का कैलाश शर्मा ने विरोध करते हुए स्वयं भोज में खाना खाया तथा



अपना व्यक्तिवाचक नाम कैलाश शर्मा से कैलाश सत्यार्थी नाम उन्होंने अपना लिया।

कैलाश सत्यार्थी जब पाँच-छः वर्ष की आयु में स्कूल गए तब पहले दिन ही उन्होंने स्कूल के गेट के बाहर एक मोची और उसके बच्चों को जूता पॉलिश करते देखा,

2023-24



मोची का बच्चा प्रतिदिन स्कूल के मुख्य गेट के पास जूता पॉलिश का समान लेकर स्कूल आने-जाने वाले बच्चों और अन्य लोगों की पैरों की ओर देखता रहता था कि शायद कोई आए और उससे अपना जूता पॉलिश कराए। इस बात को लेकर कैलाश सत्यार्थी ने स्कूल के पहले दिन ही अपने कक्षा शिक्षक से पूछा कि स्कूल के बाहर एक बच्चा जूता पॉलिश क्यों कर रहा है? कक्षा शिक्षक ने अपने स्कूल की पढ़ाई में ध्यान देने की बात कही और अन्य बातों पर ध्यान न देने को कहा। लेकिन कैलाश की जिज्ञासा शांत नहीं हुई तो स्कूल के प्रधानाचार्य से उन्होंने इस बच्चे को लेकर सवाल किया। प्रधानाचार्य का जवाब था कि गरीब घर के बच्चों को परिवार की आजीविका के लिए काम करना पड़ता है। वह सामान्य बात है। तो गरीब घर के बच्चों को ही काम क्यों करना पड़ता है? यह सवाल कैलाश के मन में घर कर गया। कुछ दिनों बाद कैलाश ने स्कूल के गेट के पास जूता पॉलिश करने वाले मोची और उसके बच्चे से बात की। क्योंकि हर दिन सुबह और दोपहर में उस बच्चे को देखकर उनको बहुत कष्ट होता था हालाँकि कैलाश भी खुद छः वर्ष के बालक थे, उन्हें गुस्सा आता

था। उनका कहना था कि इस बच्चे को तो स्कूल में होना चाहिए। कैलाश के मन में कई प्रश्न घूमते रहते थे।

समाज के सभी लोगों का यह कहना कि ब्राह्मण परिवार व अन्य जाति के लोगों के ऊपर यह लागू नहीं होता कि सब लोग काम करें, मजदूरी करें, तो इस जूते पॉलिश करने वाले बच्चे के लिए कैसे काम करना लागू है। कैलाश विभिन्न प्रश्नों में उलझे हुए मोची और उसके पुत्र से बात करते हैं तो मोची कहता है कि “बाबू जी मैंने तो कभी सोचा नहीं, मेरे बाप-दादा सब यही काम करते थे, मेरा बेटा भी बचपन से यही काम कर रहा है, फिर थोड़ी देर बाद मोची फिर बोला कि “बाबूजी स्कूल जाने के लिए आप लोग होते हैं। हम तो यही काम करने के लिए पैदा हुए हैं। मोची का यह जवाब सुनकर वह संतुष्ट नहीं हुए “यही काम करने के लिए पैदा हुए हैं” उन्हें समझ में आया कि अपने बचपन, आजादी और भविष्य की कीमत पर ये बच्चे गुलामी, मजदूरी करते हैं, स्कूल से वंचित हैं ये देखकर कैलाश के अन्दर एक चिंगारी प्रज्वलित हो गई। उस चिंगारी के असर ने कैलाश को बच्चों की मजदूरी, गुलामी के खिलाफ देश और दुनिया के स्तर पर आन्दोलन की शुरूवात करने के लिए प्रेरित किया।

2023-24

कैलाश सत्यार्थी ने भारत से बाल-श्रम विरोधी आन्दोलन तथा बच्चों की शिक्षा के अधिकार के लिए काम करना शुरू किया जो धीरे-धीरे भारत के आस-पास के देशों में फैल गया धीरे-धीरे यह चिंगारी पूरी दुनिया में फैल गयी और अब यह मुद्दा बन गया।

हर इंसान जो इस धरती पर जन्म लेता है उसके अन्दर आजादी के लिए तड़प होती है उससे बढ़कर ताकतवर कुछ नहीं होता। अच्छाई की रोशनी जीवन में न होने से तथा शिक्षा के अभाव से मनुष्य बुराई और बुरे काम की ओर प्रवृत्त होता है।

कैलाश सत्यार्थी युवाओं के बारे में कहते हैं कि “युवाओं की सबसे बड़ी ताकत सपना देखना और उसका पीछा करना है क्योंकि सपना रोशनी है हमारी दृष्टि है, सपना हमारा लक्ष्य है, सपना हमारा हाथ-पैर और आवाज है। सब की खुशहाली समृद्धि के लिए जो सपना देखते हैं, वह अपने आप में एक बड़ी शक्ति है।

वैश्विक यात्रा (ग्लोबल मार्च) :- दुनिया के तीन जगह मलिला, मोपलो और केपटाउन से शुरू होकर यूरोप में तीनों संयुक्त होकर जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र संघ में

अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठन के भारत असेम्बली में गया। वहाँ अन्तरराष्ट्रीय कानून की माँग की गयी। 103 देशों से होकर यह यात्रा गुजरी इसमें भुक्त भोगी, गुलामी में रहे बच्चों का कहना था कि हमें औजार और हथियार न देकर हमारे हाथों में किताब, पेंसिल दी जाये, अर्थात शिक्षा की माँग उठी, इस माँग से अधिक ताकतवर और कोई आवाज नहीं हो सकती थी। क्योंकि सच्चाई की आवाज को ईश्वर की इच्छा के रूप में माना जाता है।

वैश्विक यात्रा में 103 देशों के डेढ़ करोड़ लोगों ने छः माह तक इस यात्रा में भाग लिया। और 80,000 कि.मी. की यात्रा करते हुए जिनेवा पहुँचे तो 71 देशों के प्रधानमंत्री, राष्ट्राध्यक्ष इस वैश्विक यात्रा का समर्थन कर चुके थे। एक वर्ष के अन्दर बच्चों की गुलामी, बाल श्रम के विरुद्ध अन्तरराष्ट्रीय मुद्दा बन गया। तब दुनिया में 25 करोड़ बाल-मजदूर थे। 2016 में यह संख्या 15 करोड़ के लगभग रह गयी। आज यह संख्या निरन्तर कम होती जा रही है।

कैलाश सत्यार्थी ने सवा लाख बच्चों को बाल-श्रम, दासता तथा शोषण से आजाद कराया था कैलाश



2023-24



अशरफ बीमार पड़ गया और घर का काम नहीं कर पाया तो बीमार अशरफ को दो दिन खाना न खाने का दण्ड दिया। दूसरे दिन अशरफ को दूध का गिलास देकर अपने बच्चे को देने के लिए कहा, उसका बच्चा दूध पीता था। गिलास में आखिरी में दो-तीन दूध की बूंदें रह जाती हैं उसे अशरफ पी लेता है, उसे ऐसा करते देख लिया गया। फिर उसे बुरी तरह से पीटा गया। गैस चूल्हा चालू कर उसका हाथ जलाया गया। प्रेस (आयरन)

सत्यार्थी ने व्यक्तिगत प्रयासों से दस हजार बच्चों को गुलामी से मुक्त कराया था। कारखानों, खदानों व अन्य स्थानों पर बाल श्रमिक के रूप में दासता झेल रहे बच्चे जो मानसिक रूप से विकृष्ट या असंतुलित हो जाते थे, उनके लिए दिल्ली में मुक्ति आश्रम बनाया गया और गुलामी में रहे बच्चों को सामान्य जीवन दिया और उनके समृद्धि के लिए काम करना शुरू किया। राजस्थान में बाल आश्रम बनाया गया, यहाँ बच्चों को लाकर उनका आत्मविश्वास जगाना व जीवन के प्रति एक नया नजरिया देने का प्रयास किया गया।

कैलाश सत्यार्थी और उनके साथियों के द्वारा बाल-श्रमिकों, विभिन्न स्थलों में गुलामी कर रहे बच्चों के लिए कानून और योजना बनाने के लिए संघर्ष किया गया, जिसमें उनको सफलता मिली।

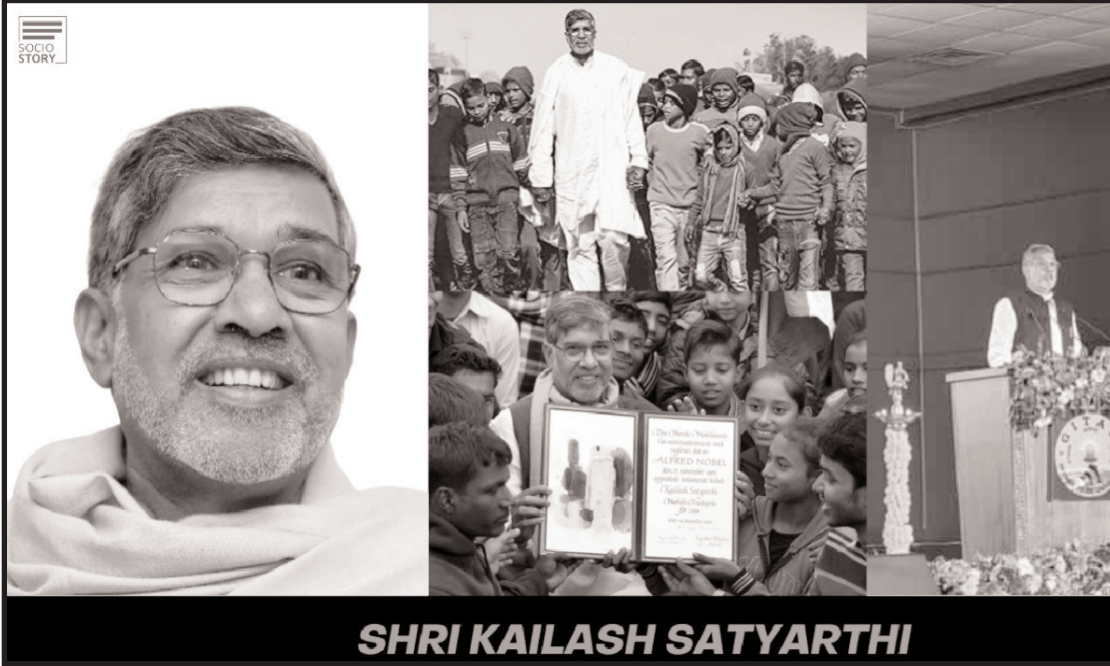
एक बच्चे अशरफ की मुक्ति की कहानी बताते हुए कैलाश सत्यार्थी जी कहते हैं कि “एक बड़े नौकरशाह आई.ए.एस., आई.पी.एस. अपने गाँव से एक गरीब मुस्लिम परिवार के बच्चे अशरफ को पढ़ाने लिखाने, अच्छी जिन्दगी देने का वायदा कर अपने साथ शहर लेकर आए। यहाँ अशरफ से दिनभर घर का काम करवाते थे। एक दिन

गरम करके उसके शरीर की त्वचा पर लगायी गई। उसके शरीर की त्वचा को नोचा गया। इस उत्पीड़न से अशरफ ने अपनी आँख तक खो दी। जिसे कैलाश सत्यार्थी ने उस ब्यूरोक्रेट के घर से अशरफ को आजाद कराया।

ऐसे ही पत्थर खदान में काम करने वाले एक बच्चे की कहानी है जिसे मुक्ति आश्रम ले जाया गया, जहाँ पढ़ने में उसकी रुचि के कारण कैलाश सत्यार्थी के मुक्ति आश्रम ने उसकी पढ़ाई का खर्चा उठाया और अब वह पढ़ लिखकर मुक्ति आश्रम के आर्थिक प्रबन्धन का काम देखता है। उसके तीन पुत्र हुए जो नौकरियों में हैं। तो कहने का अर्थ है कि एक शिक्षित सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ता है तो समाज में खुशहाली व समृद्धि आती है। क्योंकि वह व्यक्ति समाज में सृजन, निर्माण व विकास में सहयोग करता है न कि समाज के लोगों के लिए कोई समस्या खड़ी करता है।

बचपन बचाओ आन्दोलन :- इसके अन्तर्गत छोटे बच्चों की बन्धुवा मजदूरी, बच्चियों के वैश्यालय में जबरदस्ती काम कराने का विरोध कर उन बच्चों के बचपन की सुरक्षा और उन्हें शिक्षा देकर बेहतर इंसान बनाया जाए इस बात को कैलाश सत्यार्थी ने महत्व दिया।

2023-24



SHRI KAILASH SATYARTHI

दरी या गलीचा उद्योग में दुनिया भर में बाल - श्रमिकों से काम कराया जाता था भारत में मिर्जापुर और भदोई में 213 उद्योग संचालित थे, जहाँ बड़ी संख्या में बाल मजदूर कार्यरत थे। उनको इस काम से मुक्ति दिलाने का काम कैलाश सत्यार्थी ने किया।

वैश्विक पहचान :- 1999 में अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठन ने सी 182 नया आदोलन द्वारा बाल बन्धुआ मजदूरी पर प्रतिबन्ध लगा दिया। 1980 सी.ई. में 80 बीमार बच्चों को इन्होंने मुक्त कराया था।

शिक्षा यात्रा :- शिक्षा यात्रा कैलाश सत्यार्थी जी के द्वारा शुरू की गयी। उनका कहना था कि बाल श्रमिक के रूप में कार्यरत बालक या बालिका शिक्षा प्राप्त कर इंसान बन सकते हैं। वे अपने उद्धार के साथ समाज के विकास को गति देने में भी भूमिका निभा सकते हैं।

शिक्षा यात्रा के प्रभाव वर्ष से 2002 सी.ई. में 86 वें संविधान संशोधन द्वारा 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा बच्चों का मौलिक अधिकार बन गया।

वर्ष 2014 में कैलाश सत्यार्थी को बच्चों और

युवाओं के दमन, शोषण के खिलाफ संघर्ष और उनकी शिक्षा के लिए संघर्ष करने के लिए नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जिन बच्चों को कैलाश सत्यार्थी ने गुलामी या बन्धुवा मजदूरी से आजाद कराया उनके बारे में उनका कहना था कि मनुष्य की वास्तविक ताकत बराबरी या समानता के स्तर पर व्यवहार करना है। किसी को नीचा दिखाना या उस पर अहसान करने की बात करने को वे मूर्खता कहते हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने समाज में एक अच्छा कार्य करने का प्रयास किया। उनका प्रयास विश्वव्यापी रहा, जो उनकी मानव समाज व दुनिया को लेकर यह सकारात्मक सोच है कि नैतिकता से समाज में बुराई तथा बुरे काम करने वाले लोग कम हो जाएंगे। उनका ऐसा विश्वास मानव समाज को एक नई दृष्टि व सकारात्मक ऊर्जा से भर देता है। यही सकारात्मक ऊर्जा व्यक्ति व मानव समाज को महानता के स्तर तक ले जाती है। जिसकी आज हमें आवश्यकता है।

000

2023-24

2023-24

2023-24

यूँ ही चलते चलते

प्रतिमा दुबे
पीजीडीसीए



यूँ ही चलते चलते हम कहाँ आ गये,
मंजिल तो ये नहीं थी, हम जहाँ आ गये ।

चाहा था लकड़पन में, कि हम होंगे कब जवां
सोचा नहीं था बचपन ही है खुशियों का समां।
ना चिन्ता, ना दुख था किसी बात का,
मासूमियत से भरा था वो प्यारा जहाँ ।
वो सभी खुशियों के पल हम गवां कर आ गए,
मंजिल तो ये नहीं थी हम जहाँ आ गए।
मन ललचाता है अब उस बचपन में जाने को,

दिल के हर जज़्बात कैसे बताएँ इस जमाने को
वक्त नहीं अब पास किसी के सुकून के पल बिताने को,

व्यस्त है सारे काम में अपने, चार पैसे कमाने को ।
उस स्वर्ग से इस नरक में हम कहाँ आ गए
मंजिल तो ये नहीं थी हम जहाँ आ गए।

यूँ ही चलते चलते हम कहाँ आ गए,
मंजिल तो ये नहीं थीं हम जहाँ आ गए॥

2023-24

मोर छत्तीसगढ़ सिरिराम के ननिहाल

अनुपमा कश्यप
सहायक प्राध्यापक (रसायन)

2023-24

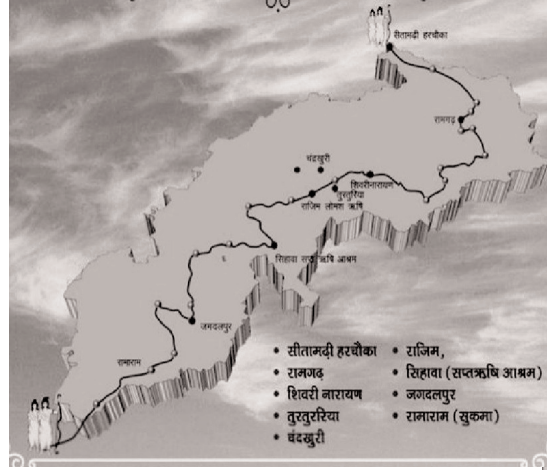
सिरिराम जी के पियारे ननिहाल हावै,
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुधर लागे।
धन्य होंगे कौसल देस ह, धन्य कौसल्या मैया,
इहाँ के माटी में खेलिस ए, नानकुन राम ललैया।

ओकर मीठ-मीठ बानी, घुंघरू पैरी बाजे,
मोला छत्तीसगढ़ के माटी, बड़ सुधर लागे।
इहाँ महामाया, बम्लेश्वरी, दंतेश्वरी, समलई मैया,
तुरतुरिया में जनमें लवकुस, जननी सीता मैया।

शीतला माता के छईयाँ ह, सुहावन लागे,
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुधर लागे।
शिवनाथ, हँसदेव, इंद्रावती, मांड, अरपा, पैरी ला जानी,
डंकिनी, शंकिनी नदिया कलकलदेवत सबला पानी।

महानदी के पानी, मीठ-मीठ लागे,
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुधर लागे।
ठेठरी, खुरमी, दहरोरी अऊ, इहाँ के मिठई बबरा,
भाजी बासी के खवैया अरसा चीला फरा।

भगवान ला जूठन बैर सबरी के मीठ लागे,
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुधर लागे।
तेन्दू, चार कोदो अऊ कुटकी रागी हर्ग बहेरा,
धन कटोरा कइथे एला महुआ ले उजियारा।



हरियर धानी चुनरी ओढ़ भुइयाँ दुल्हन लागे,
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बड़ सुधर लागे।
सिवरी नारायण, चंद्रखुरी, सिरपुर, राजिम, डोंगरगढ़,
रामलला के चरण परिस इहाँ धन्य है तीरथगढ़।

कण-कण में हे राम, पावन-पावन लागे,
मोला छत्तीसगढ़ के माटी, बड़ सुधर लागे।
सिरिराम जी के पियारे ननिहाल हावे,
मोला छत्तीसगढ़ के माटी बर सुधर लागे।

2023-24

2023-24

वो तो औरत है ना

संकलित

लड़के बाहर खड़े हैं मुँह छुपा लेना
तंग भी करें तो सह लेना
सही है
वो तो औरत है ना

चीर-हरण के बाद भी
गलत है द्रौपदी का युद्ध प्रण लेना,
सही है धर्म राज का पत्नी को ही
घूत सभा में लगा देना,
गलत नहीं, वो तो औरत थी ना

पतिव्रता स्त्री पर मिथ्या लॉछन लगाकर?
छलकर के इन्द्र निर्दोष हुआ था
माता अहिल्या को श्राप देना, ऋषि
गौतम का न्याय हुआ था।
बेबस नारी का उद्धार करना भी तो
राम की ही महिमा है ना,
सही था
वो तो औरत थी ना!

हर बार लड़कियों को ही गिराना
न चाहते हुए भी उसी का हमेशा सर झुकाना
दोष चाहे किसी का भी हो
वो तो औरत है ना

साक्षात् लक्ष्मी-रूप होकर भी
पतिव्रता की मूरत सीता से बारम्बार
अपनी शुद्धता का प्रमाण लेना
मिथ्या समाज के कहने पर

श्री राम का भी परित्याग कर देना
सब सही था
अरे वो तो औरत थी ना

हर एक चीज पे लड़कियों का ही समझौता कर लेना
उसे पिता या पति का ही नाम देना
सही है,
अरे वो तो औरत है ना

दुनिया में माँ से प्रेम का डिब्बेश पीट कर
उस 24 घंटे काम करने वाली माँ को
कितनी आसानी से
बेरोजगार बता देना
सही है,
वो तो औरत है ना!

सतयुग में या त्रेता में
द्वार में या कलयुग में,

हर बार नारियों का ही दमन करना,
सारे दोष हमेशा उसी को देना
सही मान लिया जाता है
बस यही कहकर
अरे, वो तो औरत है ना!!

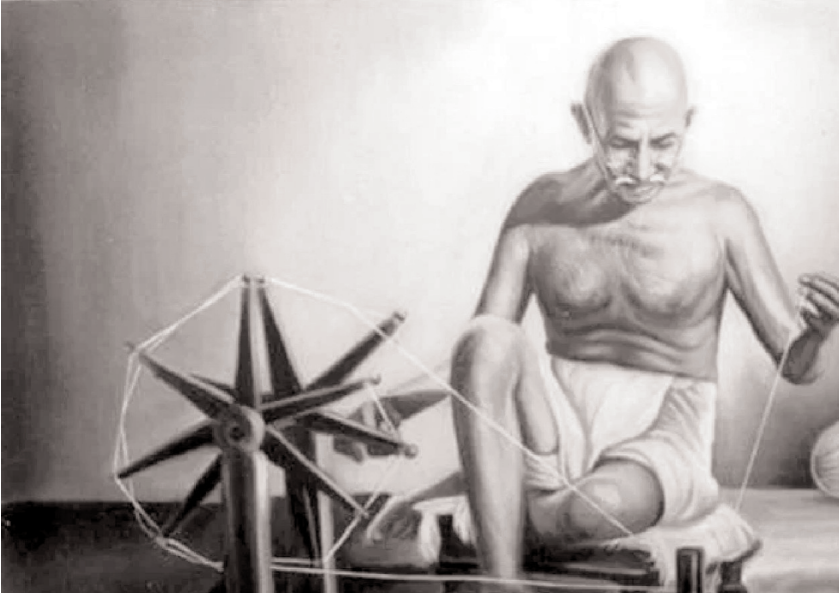


2023-24

प्यारे बापू

हरीश कुमार साहू (बी.ए. तृतीय वर्ष)

2023-24



हम सब के थे प्यारे बापू
सारे जग से न्यारे बापू
जगमग-जगमग तारे बापू
भारत के उजियारे बापू
लगते तो थे दुबले बापू
थे ताकत के पुतले बापू

नहीं कभी डरते थे बापू
सबको गले लगाते बापू
'हम है एक' सिखाते बापू
सच्ची राह दिखाते बापू
चरखा खादी लाए बापू
है आजादी लाए बापू
कभी न हिम्मत हारे बापू
आँखों के थें तारे बापू

2023-24

2023-24

Anshika Tiwari
B.sc. CBZ III semester



She's the light,
Of her might.

She's the moon,
Of her parent's boon.

Not tears, you'll find courage in her eyes,
Because' she has a charisma that never
dies!

You don't have to praise her, as she's
already a cynosure,
That shines brighter even in the inkiest
night roars!

Her eyes tell a story,
Of her magnificent glory.
Yes, she cried,
She was bashful,
But now you'll find her eyes dried,
And a new one, blissful!

Remote from the past,
She's on a new expedition,
Doing her recast,
Making her new definition!

2023-24

THIS SUMMER

by - Dr. Monika Sharma
Guest Lecturer, Dept. of English

It was the month of March, 2020. Summer had given way to autumn. Wind-chimes were tinkling at their peak. The vibrations of the pipes radiated the sound after being struck with the air column. The mute and un-mute sounds of wind-chimes reminded me of the beginning of autumn, as leaves were shedding. The crackling sound of shedding leaves was very familiar to my ears. Hemang, just turned thirteen, was too excited to take his summer vacation. He was badly waiting for this as this was going to be his best summer vacation. Indeed, he had many reasons to be happy. His first cousins were turning up from Sydney to India. And, secondly after so many meetings and long discussions his parents finally agreed to buy a pup for him.

Since the last fifteen days back the daily discussions took place sometimes in the evening and sometimes at dinner tables almost put him in a dilemma. This was all about the responsibility. Taking care of a dog was indeed a big responsibility,

he knew it so well. Hemang was far more sensible than that of his age. His father remained on tours and his Mom was working too.

"Owning a dog is a joy, privilege, and responsibility. If you are considering



bringing a canine companion into your life, think seriously about the commitment that being a responsible dog owner entails. Before deciding that a dog is right for you, make an honest assessment: are you ready for the emotional and time commitment owning a dog requires?" Dad asked.

2023-24

2023-24

2023-24



Questions, advises, precautions were there in great amount; the answers though were missing which made him more and more puzzled. Hemang always felt the missing company of siblings and always felt a little jealous when his cousins came with siblings. Finally, the family reached a decision to take a pup. Hemang had already done his research on dogs various breeds, food, and their habits. He was surfing the internet and all of a sudden he stared at the picture, wondering vaguely what was thereabout it that seemed familiar. Crazy Golden Retriever, he thought, 'very sweet and friendly - and I like it ... Golden Retriever ... Golden Retriever ... 'My God!', he cried suddenly.' 'My little munchkin, that's who it is,'

The research was at its peak. Hemang was too busy to do some essential phone calls at different Dog Kennels. He was taking some general inquiries about

the price, availability, breed and food. A day had been decided to visit a kennel as soon as kennel's owner provided the information about the availability of a new-born healthy pup. Hemang moved with his father and reached the kennel. His father moved on glancing without any interest at the things in the kennel. Hemang stopped to look at it with a puzzled mind and turned

to go on.

'Wait a minute', kennel's owner said'

'Hmm, Hemang nodded.'

The Kennel' owner came back with a very healthy pup in his hands.

'Sir, this is one of the healthiest pups in my the kennel', he said.'

The pup was in a parcel. Hemang was standing by a tiny broken table, unwrapping the parcel in his hands. This had made him extremely rich.

'I like it'

'It's terrible'

'It's marvelous'

'It's an angel. I love him all.' Hemang shouted, embracing him.

Then he sat down, staring affectionately at its face.

I'm extremely rich, Hemang said, 'Isn't that true, Dad?'

'Of-course.' how do you feel, Hemang?' Dad asked?'

2023-24

'Fine, too good!' Hemang responded.

Hemang's Dad was quite satisfied to see the healthy pup. He paid the owner the amount of twenty-four-thousands rupees and moved away to where the car was parked. Hemang took the puppy in his hands very carefully and sat in the car beside his Dad. First, they decided to get the pup vaccinated and his Dad turned towards doctor's clinic and after that they reached home. I welcomed the new angel of the house. Hemang was on his seventh sky and got too much busy in taking care of him. He named him Skecher.

In the meantime Hemang's uncle, aunt and cousins came to India and the house was full of family members. I was little worried thinking about the great responsibility and especially once vacation is over. Hemang looked worried.

'After vacation when the three of us will be busy in our daily routine life; who will take care of the pup?' Hemang asked me worriedly.'

'We will manage, don't worry.'

Three kids and Skecher made the house full of noise. The pup was running behind three of them. The day was quite tiresome. It was the afternoon of Saturday,

March 21, 2020. All of a sudden, the news about a pandemic Covid-19 spread all over the world. A meeting was held by the Principal of the college and soon after he declared a fifteen day holiday. However, 'work from home' had been assigned to the faculties. I reached home hurriedly. Kids were playing on the ground with Skecher. I turned on the T.V. to listen to the speech



of our respected Prime Minister Narendra Modi, declaring a complete lock-down of thirteen days. People were dying all over the world.

The news of complete lock down gave a kind of contentment to Hemang; as he felt a little relaxed to know his parents' presence at home. On the other hand pup started peeing everywhere in the house. He was hardly twenty days old, a little adorable baby, who itself was trying to adjust in the atmosphere with new people.

2023-24

2023-24

2023-24

In the beginning, Hemang was too energetic to take care of pup's each and every responsibility. He took enough interest to manage, but gradually he seemed a little restless to run after the little creature. No doubt, this made me a little tired too. And this was just the beginning.

As the situation got worse, the cases of Covid-19 were increasing day by day. There were new challenges to cope with. Hemang was tired of wiping and mopping the floor, taking him for walks and taking him to pee over and over again. More over he was not getting his leisure time for himself. However, two more months had passed and Hemang and I undoubtedly started feeling that we are truly incapable of shouldering this responsibility. Haphazardly, we started trying to find out the buyers to sell it. Firstly, Hemang's Dad talked to the owner of the Kennel from where the pup had been purchased and later on some more kennels. The family was in a dilemma.

Hemang's father, Hemang and I cried a number of times as we were attached to the pup and at the same time in a dilemma. On the one hand we wanted to keep him but on the other hand it looked much harder to cope-up with this.

Some what after fifteen days the phone rang and I picked up. It was the owner of the kennel 'Madam, I've found a good buyer, they are nice people, and they

want a pup immediately' said the kennel's owner. For a moment my whole body shook and I said, 'alright'. I put the receiver down. I told my husband that a buyer is turning up in the evening. Hemang and I were in deep grief and Hemang started crying. In half an hour the buyer came with the money. He took the pup in his hands and to my utter surprise the pup looked quite friendly in his lap. As soon as I saw this, tears rolled down from my eyes in front of the buyer. He went away with the pup. His absence affected me in a very big way. I was trying to look normal but I was not, so was Hemang. Hemang cried secretly. Often I caught him wiping tears.

The next day, we heard the news of a lockdown, which had been extended for the next 15 days again. The only benefit that took place during Skecher's absence was that we were less tired physically, though mentally vulnerable. Days passed away, and the cases of Covid-19 kept on increasing. People were losing their jobs and getting into depression. Later in May, one day the phone rang in the afternoon. I picked it up. It was Mrs. Shukla's call who took our pup. After a formal talk she requested me to take care of Skecher for fifteen days only if I could manage, as her son was getting married. A few relatives will be invited, she said. I asked her to wait for an hour. I wanted to talk to my husband. She agreed and I disconnected.

In the afternoon I talked to my

2023-24

huband and he simply denied because had hardly settled. I kept on thinking the whole day and night and could not sleep. Her words were echoing in my ears as she told me that if I could not manage she will hand over the pup to a truck driver for the time being. And I didn't want it at any cost. I gathered my courage and made my husband agree to keep Skecher



merely for fifteen days. We brought him home and I felt the happiness was again at my doorsteps. Hemang was very happy and at the same time he knew that he was only here for some days. I noticed many changes in the pup. He looked more sensible and civilized than ever before.

However, more than fifteen days passed and my husband asked me to call Shuklas to take their pup back. I called her in the evening. I could not believe my ears when I heard from the other end. 'Monika, could you please take your pup back? As we are not able to take care and moreover the house is full of relatives, she said.'

I almost trembled hearing all this. It was unbelievable for me. I was terrified. What would I tell my husband now? Hemang looked happy somewhere from inside but he pretended to be worried. Perhaps, in all these days he had understood the value of his company. Hearing all this, my husband immediately called

Shuklas. This time he called the person who came to our house to buy the pup. In an hour he himself came to our house to talk.

"My mother was a little stressed because of the marriage and relatives at home and she was all stressed," he told us. 'But if you want to keep him, that's all up to you, he continued.'

Hemang was overhearing behind the curtain and in the meantime he had already made up his mind to keep his Skecher back. On the other hand all schools had been ordered to close because of the increasing covid cases in the country. Ironically Hemang was quite happy to know of these developments as this pandemic had given him strength to keep his pup back. He succeeded in convincing his parents. This time he was quite determined and responsible to take care of the challenge.

000

2023-24

2023-24

2023-24

Mental Health in the Digital Age: Navigating Challenges and Embracing Solutions Fostering Youth Well-being in an Online World

By: Prof. Latika Tamrakar

Asst. Professor, Dept. Of IT



lives, the digital age presents both unprecedented opportunities and unique challenges, especially for the youth. Amidst the countless benefits of digital technology, the impact on mental health cannot be ignored. This article delves into the nuanced challenges faced by young individuals, incorporating recent surveys and statistics to shed light on the digital dilemmas they encounter. Moreover, it

In the rapidly evolving landscape of the digital age, technology has become an integral part of our daily lives, significantly impacting how we communicate, work, and socialize. While these advancements have brought numerous benefits, they have also given rise to a pressing concern: the impact of the digital realm on mental health.

In today's interconnected world, where every click and swipe define our daily

explores innovative solutions, aiming to safeguard the mental well-being of the youth in the digital age.

The Challenges: Unveiling the Digital Dilemmas

1. Social Media Pressures: The Rise of the Comparison Culture

The ubiquity of social media platforms has led to constant exposure to curated, often idealized, versions of others' lives. This comparison culture can

2023-24

induce feelings of inadequacy, anxiety, and depression, especially among younger generations.

Surveys conducted by major mental health organizations indicate that over 70% of young individuals experience anxiety and self-esteem issues due to social media pressures. The constant exposure to curated lifestyles leads to unhealthy comparisons, fostering feelings of inadequacy and stress.

According to a survey conducted by the National Institute of Mental Health and Neurosciences (NIMHANS), nearly 65% of Indian youth feel pressure to showcase a perfect life on social media. This pressure contributes significantly to anxiety and self-esteem issues.

2. Digital Addiction and Screen Time Overload: Balancing Act Gone.

The proliferation of smartphones and digital devices has given rise to concerns about digital addiction. Excessive screen time not only affects sleep patterns but also contributes to stress and diminished interpersonal relationships.

According to a recent study by the Pew Research Center, students now spend an average of six hours a day online. This digital addiction, coupled with academic stress, contributes significantly to the burnout. The pressure to excel academically in a digitally competitive world amplifies anxiety levels.

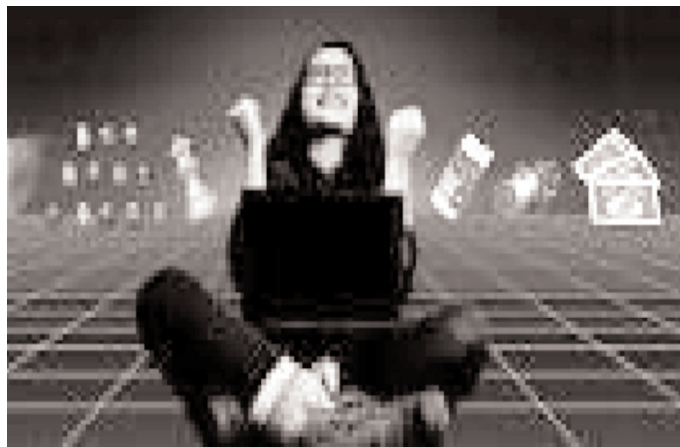
A study by the Tata Institute of Social Sciences (TISS) found that 70% of Indian students exhibit signs of digital addiction. Coupled with academic stress, this addiction leads to a detrimental impact on their mental health and overall well-being

3. Cyberbullying and Peer Pressure: The Online Menace

The digital world provides a platform for anonymous bullying and harassment. Cyberbullying can have severe psychological consequences, leading to anxiety, depression, and, in extreme cases, suicidal tendencies.

The National Council of Educational Research and Training (NCERT) survey reported that 42% of Indian students have experienced cyberbullying at some point in their digital lives. The fear of online harassment and the pressure to conform to online trends create a hostile environment for young minds.

A survey conducted by UNICEF revealed that approximately 34% of young



2023-24

2023-24

2023-24

internet users have experienced cyberbullying. The fear of online harassment, combined with peer pressure, creates a hostile digital environment, leading to stress, depression, and even suicidal tendencies in extreme cases.

4. FOMO (Fear of Missing Out) and Anxiety:

FOMO is particularly associated with the fear of missing out on social gatherings, activities, or experiences that others are participating in, especially as showcased on social media platforms. Individuals experiencing FOMO often feel compelled to constantly stay connected online, fearing they might miss important events, updates, or social interactions.

The fear of not being included in social events or missing out on the latest trends can drive individuals to constantly check their social media profiles, leading to a cycle of digital dependency and emotional distress. FOMO can significantly impact mental well-being, influencing decision-making, self-esteem, and overall life satisfaction.

Research published in the Journal of Abnormal Psychology indicates that the fear of missing out (FOMO) among young adults has risen significantly over the past decade. This constant fear, coupled with the pressure to be digitally connected, results in heightened stress levels and a sense of isolation.

5. Information Overload and Anxiety:

The constant influx of information, often

overwhelming and distressing, contributes to a state of information overload. This incessant bombardment of news and notifications can heighten anxiety levels and affect mental peace.

The Solutions: Empowering Youth Mental Well-being

1. Digital Detox and Mindfulness Practices:

Encouraging individuals to take periodic digital detoxes can help in reducing screen time and promoting real-world connections. Mindfulness practices, such as meditation and yoga, are being promoted through various apps, aiding in stress reduction and emotional regulation.

NIMHANS, in collaboration with the Ministry of Health and Family Welfare, has initiated mindfulness programs in schools across India. These programs have shown a 30% reduction in stress-related incidents among students, encouraging the incorporation of mindfulness in the national education curriculum.

According to a survey conducted by the American Psychological Association, 80% of individuals reported significant stress reduction after a digital detox. Integrating mindfulness practices into the school curriculum has shown a 25% decrease in stress-related incidents among students, according to data from the Department of Education.

2. Online Counselling and Support Platforms:

The digital age has brought thera-

2023-24

py to the fingertips. Online therapy platforms and mental health apps offer accessible and convenient counseling services. These platforms provide a safe space for individuals to seek help, fostering a sense of community and support.



A survey by Mental Health of America revealed that 90% of individuals found online counseling services effective. Platforms like Better Help and Talkspace have reported a significant increase in users, indicating a growing acceptance of digital therapy.

The Vandrevalla Foundation, in partnership with the government, has launched a toll-free mental health helpline. As per their data, online counseling sessions have increased by 50% over the past year, indicating a growing acceptance of digital mental health support among Indian youth.

3. Promoting Digital Literacy and Responsible Online Behavior:

Educating individuals, especially the younger generation, about digital literacy and responsible online behaviour is crucial. Schools and communities can play a significant role in promoting healthy online habits, emphasizing the importance of empathy and kindness in

the digital realm.

The Central Board of Secondary Education (CBSE) has introduced a comprehensive digital literacy curriculum. The program, focusing on responsible online behaviour, has resulted in a 25% decrease in reported cyber bullying cases in schools implementing the curriculum.

Studies conducted by the University of Wisconsin-Madison show that educational programs focusing on digital literacy and empathy have reduced cyber bullying instances by 30%. Schools implementing comprehensive digital literacy modules have witnessed a 40% decrease in online harassment cases, as per data from the Department of Education.

4. Role of Educational Institutions' Role: Creating Safe Spaces

Research by the National Association of School Psychologists demonstrates that schools with anti-bullying policies and mental health support witness a 50% decrease in mental health-related inci-

2023-24

2023-24

2023-24

dents. Creating safe spaces for open dialogue have been proven to reduce anxiety and stress among students, as reported in a study by the World Health Organization.

5. Parental Guidance and Involvement:

According to a survey conducted by Common Sense Media, 85% of parents believe that regulating screen time is essential for their child's mental well-being. Families that engage in offline activities together report a 30% decrease in digital-related stress, according to a study published in the Journal of Family Psychology.

6. Corporate Wellness Programs:

Employers are increasingly recognizing the importance of mental health in the workplace. Corporate wellness programs now often include mental health



support, ranging from counselling services to stress management workshops. These initiatives create a supportive work environment and reduce the stigma associated with mental health challenges.

7. Community Engagement and Awareness Campaigns: NGOs like Snehi, in association with local communities, have organized awareness campaigns on

mental health and responsible digital usage. Their surveys indicate a 60% increase in awareness levels, showing the positive impact of community-driven initiatives.

Conclusion

In the digital age, the intersection of technology and mental health presents both challenges and opportunities. While social media and digital overload pose significant threats, innovative solutions are emerging to safeguard mental well-being. By promoting digital literacy, encouraging mindful technology usage, and fostering a supportive online environment, society

can navigate the digital age while preserving mental health.

As individuals, communities, and governments collaborate, the digital age can be har-

nessed as a tool for mental health empowerment rather than a source of distress. By embracing these solutions and remaining vigilant about the challenges, we can build a digital landscape where mental well-being is prioritized, ensuring a healthier and more compassionate future for all.

000

2023-24

2023-24



definition, Science Fiction, sometimes shortened to Sci-fi, is a genre of speculative fiction that delves into concepts like futuristic technologies, space travel and extra-terrestrial life with a scientific mindset. One example of such a work of literature is Octavia E. Butler's acclaimed novel **Parable of The Sower**. This story follows the life of a young girl named Lauren Oya Olamina who lives in a world ravaged by the effects of global warming.

Lauren's world is dangerous in multiple ways. Humanity tries to out an existence on meagre means as there are very few food crops grown due to the toxicity in the ecosystem. There is a lack of fuels, there are very few means of

employment which has resulted in people turning easily to crime and meeting even basic daily needs is difficult for the majority of the population. Naturally, most of the countries of the world are on the brink of destruction. Lauren lives in California, US in the imaginary year 2024. Her family stays in a protected neighborhood surrounded by a wall, their small community is poor but is in much better condition than many who live outside their borders. Crime and brutality reigns outside their safe haven and the elders of Lauren's society warn the young ones against going out without enough protection against the violent trouble makers. The law enforcement is not a major source of defense and for the most part, the innocent civilians have to take care of themselves without much help from either the police or the government. Through this story Butler has managed to display a very believable and dark future. The dystopia of **Parable of the Sower** has a strong likeness to the predictions of many modern-day environmentalists and thinkers. Although written in 1993, this is still a very relevant piece of literature in the genre of speculative fiction.

While **Parable of the Sower** masterfully presents the difficulties that may come in a post-apocalyptic future, it also presents some hope for betterment. The protagonist Lauren puts her faith in the

2023-24

resilience of the human race and the advancement of modern science and technology. She believes that new inventions and discoveries will be the salvation of mankind, and that if the earth becomes uninhabitable, the only hope is to find a new home among the stars. Against all odds Lauren dares to wish for a better future while bravely accepting her gruesome present. The universe is vast and there may be other planets that would make a suitable new shelter for humanity.

This idea is no longer just a fanciful thought as there are scientists today working towards such goals; the exploration of Mars being one such example. While moving to another planet still seems far-fetched presently, many new technologies and eco-friendly methods of sustainable living are in the works right now. The coming year 2024 does not seem as dismal as Butler had imagined, but her vision for such an eventuality still seems logical, even possible. As a story, **Parable of the Sower** is an interesting take on the lax initiatives towards curbing global warming, but it is not completely hopeless.

Above all else, **Parable of the Sower** is a story about embracing change and learning from it. Butler masterfully crafts a scenario where the only way is forward with a protagonist firm in her



beliefs as the world falls apart around her. Apart from this resilience, her second most important valuable asset is her community. Lauren does not walk on her path to safety alone, she takes in all who wish to join her on her journey, thus making a new family of her own. The world keeps changing and the only means of surviving in it is to change with it. Butler, through her character Lauren, says it very simply: "All that you touch you change. All that you change changes you. The only lasting truth is change." 000

2023-24

2023-24

2023-24

बदलाव

प्रतिभा श्रीवास्तव
प्रयोगशाला तकनीशियन

मैं एक बार ट्रेन से भाटापारा जा रही थी। ट्रेन में काफी भीड़ थी, कहीं पर भी जरा सी भी जगह नहीं थी, सभी अपने अपने खड़े होने की जगह बना रहे थे। मुझे थोड़ी सी जगह मेरी एक महिला सहकर्मी ने देते हुए कहा कि मैडम आ जाइए, मैंने भी राहत की सांस लेते हुए बहुत ही विजयी भाव से मानो सभी परीक्षार्थी में मैं ही पास हो पाई हूँ ऐसे गौरवान्वित, हर्षित होते हुए



अन्य लोगों को देखते हुए सोचने लगी कि चलो कम से कम बैठने की जगह मिली। लेकिन थोड़ी देर बाद ही मुझे ऐसा लगा कि इससे तो ज्यादा अच्छा था कि मैं खड़ी ही रहती क्योंकि बैठने की इतनी थोड़ी-सी जगह थी कि बिल्कुल भी हिलते डुलते नहीं बन पा रहा था। एक ही स्थिति में पैर रखकर बैठने से पैर भारी भारी से हो रहे थे, एक पल को लगा कि मैं भी खड़ी हो जाऊँ लेकिन बैठने का मिथ्या सुख मुझे उठने नहीं दे रहा था।

मैं इसी कशमकश में थी कि तभी तृतीय लिंग (किन्नर) समुदाय के तीन चार लोगों ने बोगी के अंदर प्रवेश करते हुए बैठे हुए लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा और सभी बड़ी उत्सुकता से उन्हें देखने लगे जो प्रत्येक युवा से पैसा माँग रहे थे। कोई उन्हें बीस का नोट देता तो वे बड़ी ईमानदारी से दस का नोट वापस कर देते याने कि वे सभी से केवल दस का ही नोट ले रहे थे। काफी देर की खींचातानी के बाद वे दूसरी बोगी की ओर चले गये तब सभी ने संतोष की साँस ली।

उनके जाने के बाद सब एक दूसरे को देखकर मुसकुराने लगे। मैंने सोचा कि चलो अभी तक हम सब एक दूसरे को अजनबी की तरह देख रहे थे। इन लोगों ने जाते जाते हमलोगों के लिए आपस में औपचारिक रिश्ते के सेतु बना दिए कि भाई आप सब बातें करो भले ही हमारे विषय में करो।

मैंने अपने सामने बैठ सुशील से दिखने वाले युवक से कहा ये लोग फालतू में सबको परेशान कर देते हैं। किसी ने कहा इनकी पुलिस वालों से सांठगांठ रहती है किसी ने कहा काफी लंबा गैंग है इनका, सीधे सीधे इनको पैसा दे दो और पीछा छोड़ाओ। मैंने बातों के क्रम को आगे बढ़ाते हुए कहा कि इनकी शिकायत तो उच्च स्तर पर होनी चाहिए।

इस पर उस सुशील से दिखने वाले युवक ने कहा आंटी यदि ये ऐसा न करें तो क्या करें? इनका जीवन कैसे चलेगा? ये तो अपने भाई-बहन, माता-पिता से छूट गये हैं, इनके लिए कोई है भी नहीं, कोई आरक्षण भी नहीं ताकि ये पढ़ लिखकर कुछ कर सकें नाही इनके विकास के लिए कोई योजना है। अगर ये पैसा नहीं मांगेंगे तो क्या करेंगे? जहाँ भी जाते हैं सभी उनका उपहास उड़ाते हैं उन्हें कितनी मानसिक पीड़ा होती है आपने कभी सोचा?

उस युवा की संवेदना ने तृतीय लिंग समुदाय के लिए मेरी सोच ही बदल दी। मेरा मन अपने जैसे उन सभी के लिए जो उन्हें गलत समझते हैं ग्लानि से भर गया। मैं आभारी हूँ उस युवा की, जिसके एक वाक्य ने मेरी सोच का नजरिया ही बदल दिया। अब मैं कभी भी उन्हें देखती हूँ तो मुझे उस युवा की याद आती है और मेरा मन अनायास ही उन्हें सम्मान देने लगता है।

000

2023-24

MILLETS

Namrata Tirkey
M.Sc. Sem-III (Chemistry)

Millets offer nutritional security and need for promoting millets as they are highly nutritious.

In general millets are rich source of fibres, minerals and B-complex Vitamins.

Millets are non-acid forming, easy to digest and non-allergenic.

Being non-glutinous, millets are safe for people suffering from gluten allergy and celiac disease.

Millet have potential for protection against age-onset degenerative disease such as metabolic syndrome and Parkinson's diseases.

History of millets

Millets formed important parts of the prehistoric diet in Indian, Chinese Neolithic and Korean Mumun Societies. Proso millet, foxtail millet were important crops beginning in the early Neolithic of China. Millet is one of the oldest foods known to humans and possibly the first cereal grain used for domestic use. Millet have been in food use in India since 2500 BC.

Millets have been important food staples in human history, particularly in Asia and Africa. They have been in cultivation in east Asia for the last 10,000 years.



Types of millets

Major millets

1. Sorghum (Jowar)
2. Pearl millet (Bajra)
3. Finger millet (Ragi)

Minor Millets

1. Foxtail Millet (Kakum)
 2. Kodo millet (kodon)
 3. Barnyard millet (Sanwa)
 4. Little millet (Kutki)
 5. Proso millet (Chenna/ Barri)
- Pseu do millets

2023-24



Amaranth
(Ramdana/Rajgira)

Buckwheat (Kutku)

Sorghum Millet (Jowar)

Commonly called jowar in India. Largest sorghum producing states in India are Maharashtra and Karnataka. Some varieties of sorghum are use for ethanol production.

Pearls Millet (Bajra)

Commonly known as bajra in India. Mostly grown in states such as Gujarat, Rajasthan, Haryana, Maharashtra etc.

Finger Millet (Ragi)

Commonly known as ragi In India. Ragi millet is popular for its nutritional benefits, Foxtail millet or Italian millet is usually grown in a semiarid region.

The growing season of this

types of millets in India is very short.

Kodo Millet

Kodo millet is a digestible kind of millet that contains more of the amino acid lectighin. It helps to strengthen neurological system.

Barnyard Millet

This is one of the millets in India that is grown in certain parts of Andhra Pradesh and Uttarakhand. Its specialty is that it grows even in marginal lands.

Little Millet

Whether there is water logging or drought, this millet can be easily grown. This type of millet is usually found in the Eastern Ghats in India.

Proso Millet

Also called broom corn millet. This grain



2023-24



varities of millets. It is also known as kuttu in India.

Health benefits of millet

Helps to protect against heart diseases. Lowers bad cholesterol levels. Beneficial in detoxifying body. Prevents onset of breast cancer. Effective in reducing blood pressure . Helps to optimize kidney, liver and immune system health.

is mostly found in the drier regions of Asia, Australia, Africa, Europe and North America.

Amaranth millet (Rajgira)

Amaranth also known as Rajgira, is a great source of protein and dietary fiber. It is excellent for a balanced diet.

Buckwheat Millet (Kuttu)

Buckwheat is one of the most popular

Nutritional benefits of millets

Millets are highly nutritious, providing a rich source of protein, fiber, vitamins and minerals. Millets do not contain gluten, which makes hem an excellent choice for individuals who have celiac disease or are gluten intolerant.

Environmental benefits of millets

Millets are a sustainable crop that



2023-24

2023-24

2023-24

requires less water, Pesticides and fertilizers compared to other major cereals like rice and wheat. The cultivation of millets can improve soil health and biodiversity as they attract beneficial insects and birds.



Economic benefits of millets

Millets can be a profitable crop for small scale farmers, as they require less investment and can be grown in marginal lands. The production and consumption of millet can also benefit local communities and promote food security. Millets are a nutrients that are dense, low-carb alter-

native to traditional grains that can have a variety of health benefits.

They are highly tolerant to drought and other extreme weather conditions.

Millets are great source of protein, minerals and can be used in a variety of dishes to add nutritional value.

000



2023-24

आत्मशक्ति का बोध

प्रिषिता ताम्रकार (एम.एस.डब्ल्यू.)



यह घटना कक्षा चौथी में पढ़ने वाली 9 वर्षीय हेमाप्रिया की है, जब आतंकवादी उसके घर में घुसे थे और इस बच्ची ने किस तरह उन आतंकवादियों का सामना किया। यह कहानी फरवरी, 2018 की है, जब वह जम्मू में रह रही थी। उसके पिता फौज में थे। रात को उसकी माँ और दोनों बहनें सो रही थीं। उसके घर से 1 किलो मीटर दूर गनशूट का अभ्यास होता था। वहाँ से तेज आवाज आ रही थी। जैसे कि कोई बिल्डिंग फट रहा हो। उसकी माँ चौक कर उठी। घर का मुख्य दरवाजा बंद था, लेकिन शयनकक्ष का दरवाजा खुला था। आस-पास हलचल मच गई, लोग ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर होने लगे। तभी पड़ोसी की आवाज

आई। उसकी माँ ने दरवाजा खोला और उनसे पूछा - 'भैया क्या हुआ'। तभी केन्ट का अलार्म बजा। पड़ोसी से पूछने पर पता चला की भवन में कोई घुस गया है। उसकी माँ अंदर जाकर चाबी और ताला लेकर आई और पड़ोसी से दरवाजा बन्द करने को कहा, पर इससे पहले ही आतंकवादी उनके घर में घुस आये। माँ और दोनों बच्चों ने हाथ से दबाकर दरवाजा बंद करके रखा। उन्होंने अपने साथ मिर्च पाउडर रख रखा था। 2 से 3 मिनट के बाद नीचे वाली चाची और उनके बच्चे की रेने की आवाज आने लगी। फिर उनके नीचे और आजू-बाजू वालों के दरवाजे तोड़ने की तेज आवाजें आने लगी। आतंकवादी हेमाप्रिया का भी दरवाजा तोड़ने

2023-24

2023-24

2023-24



लगे। 5 घण्टे तक माँ और उनकी बेटी हेमाप्रिया ने हाथों से दरवाजों को पकड़ रखा था। आतंकवादी को लगा कि अंदर हेमाप्रिया के पापा हैं। तभी दरवाजे के छोटे से गैप से आतंकवादी ने ग्रेनाइट अंदर फेंका। बम तो बाहर रह गया पर बम की चिंगरी दरवाजे के छिद्र से अंदर चली गयी। जहाँ आतंकवादी ने गन रखा था, वहाँ हेमाप्रिया का चेहरा था। उसकी माँ ने जैसे ही उसे किनारे किया, वैसे ही उसकी माँ के हाथ में ग्रेनाइट का टुकड़ा घुस गया। कलाई की हड्डी टूट गई। पूरे 5 घण्टे दरवाजा बहादुरी के साथ हाथ के सहारे बंद कर रखा था। चोट लगने के बाद भी माँ होश में थी। हाथ से लगातार खून बह रहा था, बिल्कुल पानी की तरह। हेमाप्रिया को भी एक हाथ में चोट लगी थी। हाथ काम नहीं कर रहा था, बहन सो रही थी। अँधेरा होने के कारण हाथ में कुछ बाँध भी नहीं पायी तथा दर्द से चिल्ला भी नहीं पा रही थी। माँ के साथ उसके हाथ में भी ग्रेनाइट की चिंगारी लगी थी तथा दूसरे हाथ से दरवाजे को बंद रखा था। अचानक हेमाप्रिया की छोटी बहन अर्वातिका ने इस बीच दरवाजा खोल दिया। उसे लगा उनके पापा आये हैं। आतंकवादी घर

में घुस गये तथा किचन का सारा सामान उलट-पुलट कर दिया। तभी हेमाप्रिया आतंकवादी के पैर पकड़कर रोने लगी और माँ को अस्पताल ले जाने के लिये गिड़गिड़ाने करने लगी। माँ की बेहोशी जैसी अवस्था थी, वे थोड़ा-थोड़ा सुन पा रही थी, पर बात नहीं कर पा रहीं थीं।

अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए हेमाप्रिया आतंकवादी से बात कर उसका ध्यान भटकाने की कोशिश करने लगी। जिससे उसका ध्यान भटक गया। आतंकी बोल रहे थे कि वे कश्मीर पर अपने हक की लड़ाई लड़ रहे हैं। लगातार पानी पीने के बावजूद माँ की प्यास नहीं बुझ रही थी। बच्चों ने किसी तरह अपनी माँ को जगाये रखा तथा आतंकवादी से लड़कर उन्हें पकड़वा दिया।

प्रधानमन्त्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार-2022 से हेमा को सम्मानित किया गया। हेमा का जीवन बच्चों को संकट के समय हिम्मत, साहस, बहादुरी तथा समझ-बूझ से मुश्किल से मुश्किल समस्या का समाधान करने की प्रेरणा देती है।

000

2023-24

INDIA'S MILLETS REVOLUTION

Manisha Sinha
BSc.- III sem. (CBZ)

2023-24

Millets : Nourishing our bodies, nurturing our planet”
India's wealth, Millets for Health

(Sorghum), Sama (Little millet) Bajra (Pearl Millet) and Variga (Proso millet).

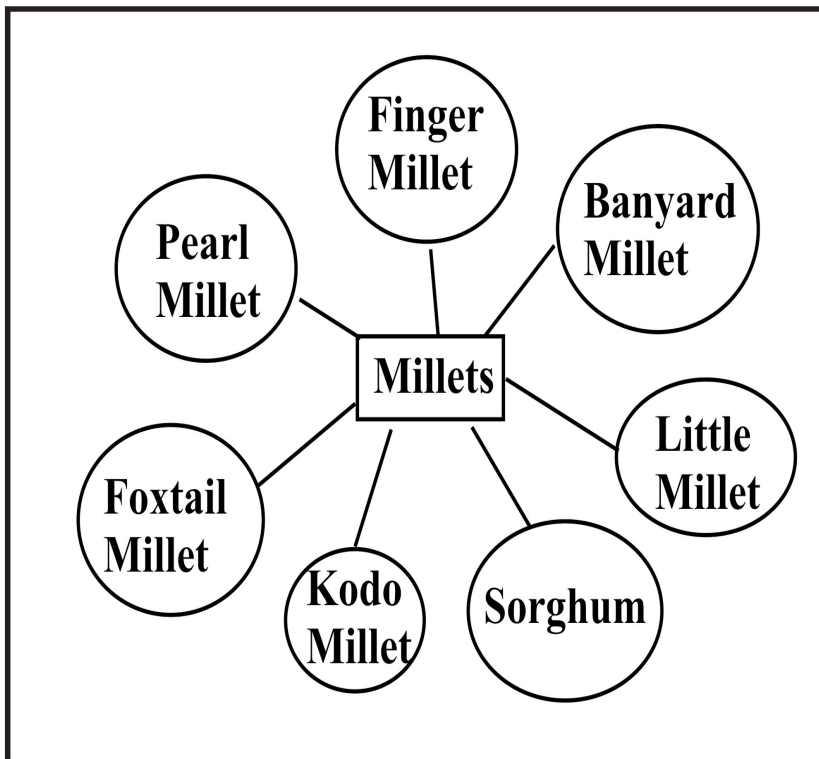
It is grown in about 131 countries and is the traditional food for around 60 crore

Introduction - The

food and agricultural Organization of the United Nation (FAO) has declared 2023 as the

International Year of Millets - Millets have special nutritive properties, as they are high in protein, dietary fibre, micronutrients and antioxidants.

What is Millet - It is a collective term referring to a number of small-seeded



annual grasses, that are cultivated as grain crops, primarily on marginal lands in dry areas intemperate, subtropical and tropical regions .

people in Asia and Africa.

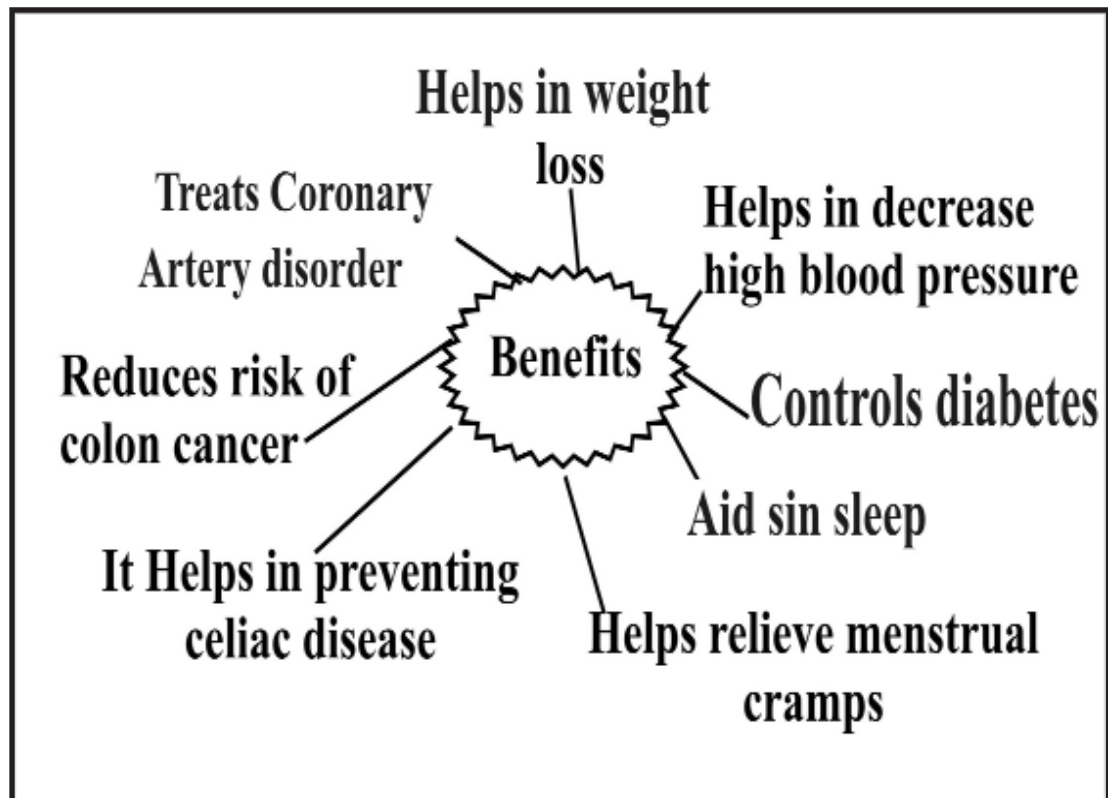
- Types -
1. Positive Millet
 2. Nutral Millet
 3. Negative Millet

Some of common Millets available in India are Ragi (Finger millet), Jowar

2023-24

2023-24

Health Benefits of Millets



Climatic Condition

Short growing season (70-100 days, as against 120-150 days for paddy/wheat) . Can grow even in poor soil. Lower water requirement It is a kharif crop

Global Distribution

India, Nigeria and china are the largest producers of millets in the world, accounting for more than 55% of the global production.

For many years, India was a major producer of millets. However in recent years,. Millets production has increased dramatically in Africa.

Why Millets

Millets are considered so important nutri-cereals because - Climate resilient staple food crops - Millets are drought- resistant, require less water and can grow in poor soil conditions. This makes them a suitable food crop for areas with unpredictable weather patterns and water scarcity.

Rich in anutrients

Millets are a good source of fiber, protein, vitamins and minerals.

Gluten- Free

Millets are naturally gluten free, making them suitable for people with

2023-24

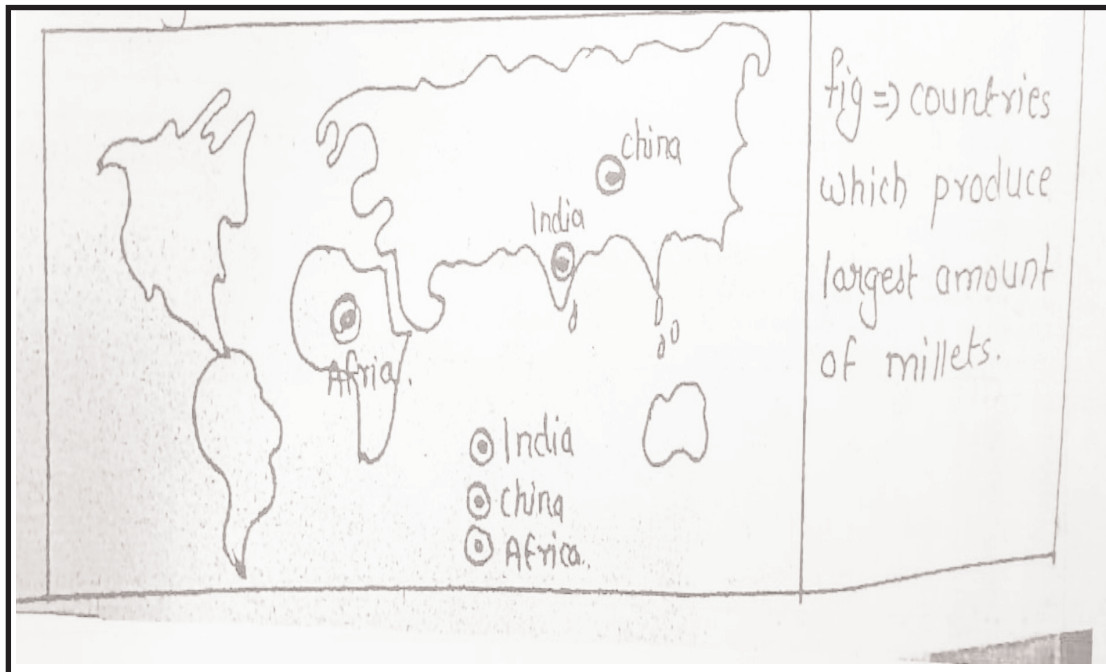


Fig = Countries which produce largest amount of millets.

celiac disease or gluten intolerance.

Adaptable : Millets can be grown in a variety of soil and climates, making them a versatile crop option for farmers.

Sustainable : Millets are often grown using traditional farming methods, which are more sustainable and environment friendly than modern, industrial farming practices.

Why Millets

1. Climate Resilient
2. Rich in nutrients
3. Gluten free
4. Fewer inputs
5. Adaptable
6. Hardier
7. Sustainable
8. Agronomic

India and Millets

India has led the global conservation on reviving millet production. Because of India, the Undeclared 2023 as the international year of millets.

Leading producer . It is the world's leading producer of millets around 41% of total production in 2020)

National food security mission - Government is implements a submission on nutraceuticals as part of the National food security mission.

State Level missions - Odisha, Madhya Pradesh and Andhra Pradesh revived the indigenous crops for food security.

Two groups of millets grown in India

1. Major millet

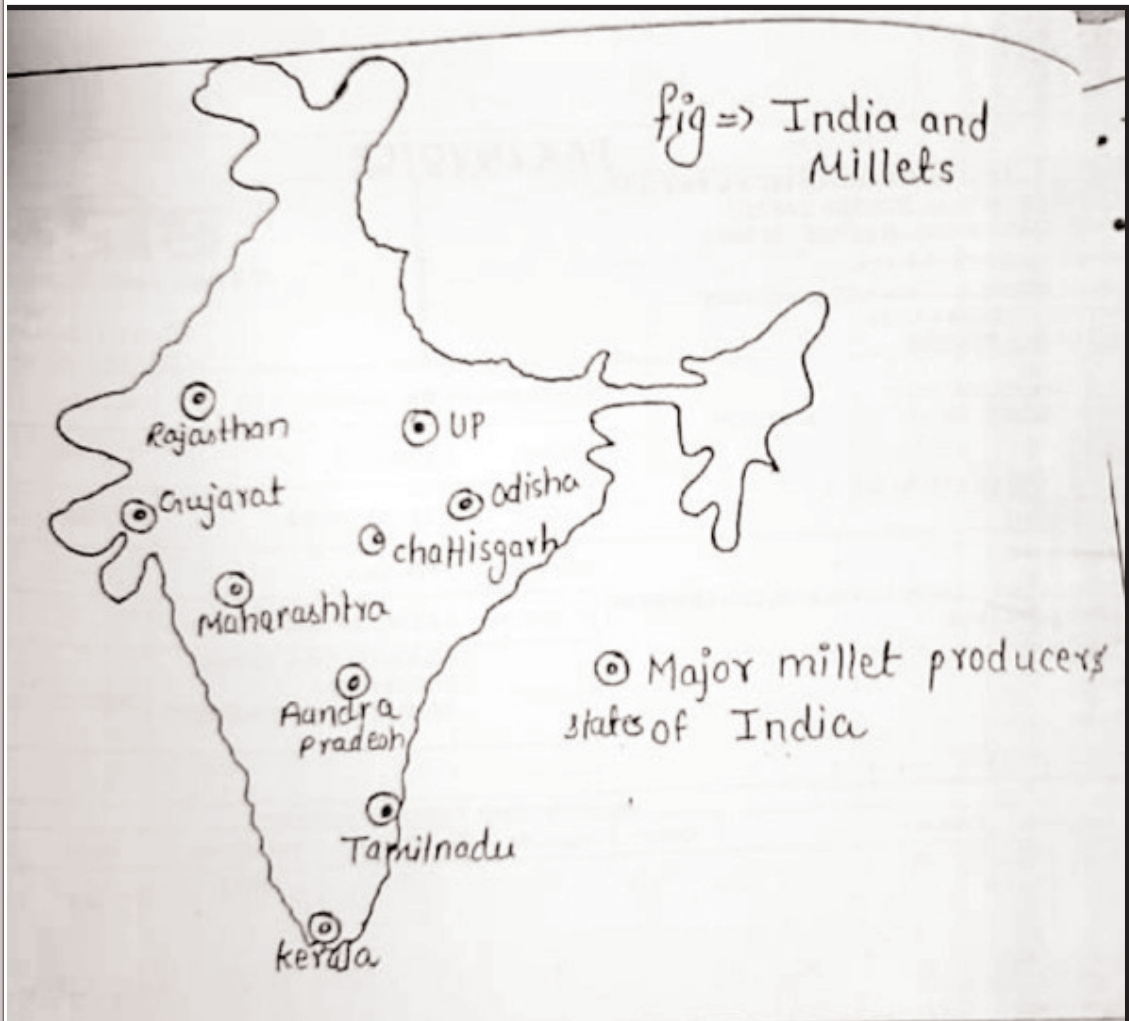
- induced sorghum, bajara

2023-24



2023-24

2023-24



2. Minor millet

Includes foxtail, Kodo kutki

Steps taken by Government

Paramparagat krishi Vikash Yojana - promotes organic farming. Pradhan Mantri Kshrishi Sinchayee Yojana - Focusses on more crops per drop for improved water use. Soil Heath Management - The National mission for Sustainable Agriculture. Pradhan Mantri Garib Kalian Anna Yojna - (PMGKY) Grown in India Pradhan Mantri Poshan

Shkati Nirman Yojana

Take Home rations

National Food Security Act (NFSA) 2013 Integrated child Development Services (ICDS) Digitisation and meas wies such as rice fortification better health and Santilization.

Way Forward

Swaminathan had suggested that coates cereals be replaced by nutri-cereals.

2023-24

Unless productivity and production are increased substantially all exhortations to consume millets will come to naught.

Millets can be used as supplementary food due to their high nutritional value.

The Government of India and state governments, notably Karnataka and Odisha have initiated millet mission.

Conclusion - Millets are so high in nutrition which can make India as well as the world a healthy place. Adequate public support and farmers consent to grow millet can ensure supply for the PDS, and ultimately provide nutritional benefits to a wide section of population.



**We have to reboot ourselves by
Switching to organics and millets**

000



2023-24

2023-24

2023-24



12th Fail फिल्म की समीक्षा

डॉ. सीमा पंजवानी

(सहायक प्राध्यापक-अंग्रेजी विभाग)

12th Fail Movie Review:

12वीं फेल के आईपीएस बनने की प्रेरक कहानी
स्क्रिप्ट निर्माता एवं निर्देशक - विधु विनोद चोपड़ा
(अनुराग पाठक की किताब 12th Fail पर आधारित)
कलाकार - विक्रान्त मैसी, मेघाशंकर, अंशुमान पुष्कर,
अनन्त जोशी, हरिश खन्ना, संजय बिश्नोई, विकास दिव्य
कीर्ति और प्रियांशु चटर्जी।

रिलीज - 27th अक्टूबर 2023

12th Fail फिल्म के निर्माता एवं निर्देशक विधु
विनोद चोपड़ा के अब तक के 45 वर्षों के कैरियर में सबसे

अधिक सरहना और अवार्ड्स जीतने वाली सर्वश्रेष्ठ फिल्म
मानी गयी है। इससे पहले उन्होंने हिन्दी सिनेमा की कई अन्य
बेहतरीन फिल्में, मुन्नाभाई MBBS, लगे रहो मुन्नाभाई, श्री
इंडियटस जैसी फिल्मों के निर्माता हैं तथा खामोश, परिदा और
1942 अ लवस्टोरी फिल्मों का निर्देशन भी किया है। इस
बार 12th Fail के स्क्रिप्ट लेखन और निर्देशन दोनों कार्य
विनोद चोपड़ा ने ही किया।

12 Fail फिल्म न केवल भारत में बल्कि विश्व
स्तर पर भी सराही जा रही है। हाल ही में हुए 69 वे फिल्म
फेयर अवॉर्ड्स 2023 में इसे 'सर्वश्रेष्ठ फिल्म' का खिताब

2023-24

हासिल हुआ। तथा साथ ही विनोद चोपड़ा को निर्देशन के लिए 'बेस्ट डायरेक्टर' व अभिनेता विक्रान्त मैसी को 'बेस्ट एक्टर' अवार्ड से नवाजा गया। यह कोई अनोखी बात नहीं कि किसी फिल्म को एक ही अवार्ड समारोह में कई अवार्ड मिले। पर ऐसी कहानियाँ जो युवा पीढ़ी में एक नयी सोच प्रत्यारोपित करे साथ ही उनके संघर्ष के समय में एक प्रेरणास्रोत बने, सराहनीय है।

विशेष: शिक्षा जगत से जुड़े युवा वर्ग के लिए एक बहुत ही प्रेरक कहानी के रूप में उभरकर सामने आई। इस फिल्म की कहानी मध्यप्रदेश राज्य के एक छोटे से गाँव चम्बल के मनोज कुमार शर्मा की कहानी है। जो कि मुंबई में सहायक पुलिस आयुक्त 2005 के बैच के अधिकारी बने।

शिक्षा से जुड़े प्रत्येक छात्र को यह अद्भुत फिल्म देखनी चाहिये। इस कहानी में अभिनेता का जज्बा 'हार नहीं मानूँगा' संघर्षों के बीच हर मोड़ पर एक उत्साह से भर देता है। इस फिल्म के संवाद में 'Re-start' बार-बार दोहराया

गया है, जब भी मनोज को हार का सामना करना पड़ता है। वह अगली बार दोगुने प्रयासों के साथ एक नई शुरुआत करने के लिए खुद को तैयार करता है। इस कहानी के अभिनेता का मुश्किलों भरे सफर से सफलता तक कि यात्रा देखकर दुष्यंत कुमार जी पंक्तियां मानसपटल पर उजागर होती है -

'कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं होता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों'।

कहानी की शुरुआत में ही देखा जाता है कि 18 वर्ष का मनोज चम्बल गाँव में अपने घर पर 12वीं के एग्जाम की तैयारी कर रहा होता है, परंतु नकल करने की वजह से इस बार इस परीक्षा में फेल हो जाता है, क्योंकि उस स्कूल के प्रिंसिपल को एक आई.ए.एस. अधिकारी आकर नकल करवाने और घूस देने के अपराध में उसे जेल भेज देता है। इस आई.ए.एस. अधिकारी से मनोज मिलता है और उन्हीं की तरह अधिकारी बनने का सपना साझा करता है।



2023-24

2023-24

2023-24



इस पर अधिकारी मनोज को समझाते कि 'नकल करना अच्छी बात नहीं'। मेरी तरह बनना है तो Cheating छोड़नी होगी। यहाँ से शुरू होता है मनोज का सच की राह के साथ संघर्ष भरा सफर।

इस फिल्म के दृश्य में एक तरफ पारिवारिक एवं आर्थिक परिस्थितियों से जूझता एक गरीब परिवार, दूसरी ओर दादी माँ का साहस भरा सपना। दादी मनोज को बताती है कि तेरे दादाजी ने भी देश के लिए अपनी जान दी, अब तू



2023-24

भी पुलिस की वर्दी पहनकर ही लौटना। दादी ने जो पाई-पाई जोड़कर पेंशन से चंद रुपयों की पूँजी रखी थी वो मनोज को ग्वालियर जाते वक्त देती हैं, पर पहुँचने से पहले ही जैसे चोरी हो जाते हैं। यह तो महज संघर्षों के द्वार खुलने की एक शुरुआत थी।

इस कहानी से युवा साहस, ईमानदारी, मेहनत, और लक्ष्य के प्रति समर्पण जैसी सीख अपने जीवन में आत्मसात कर सकते हैं। PSC की तैयारी के साथ जीवन व्यापन के लिए कुछ छोटे-मोटे काम करना, चाय की दुकान पर, लाइब्रेरी में धूल साफ करना, टॉइलेट साफ करना, आटा चक्की में काम करना। दिनभर काम और पढ़ाई कर रात में सिर्फ 2 से 3 घंटे की नींद सोना। विपरीत परिस्थितियों में, आटा चक्की के शोर में अपने फोकस (ध्यान) को लक्ष्य पर केंद्रित रखना, निरन्तर प्रयास करते रहना जैसे कई प्रेरणादायी प्रसंग सीखने को मिलते हैं। अभिनेता मनोज का चरित्र, आसपास अमीर और लक्ष्य से भटकते हुई सँगत में रहकर भी सच्चाई और संघर्ष के लिए अडिग रहता।

पारिवारिक एवं आर्थिक चुनौतियाँ हार जाती हैं



जब एक संकल्प दृढ़ता से लिया गया हो। सफलता के नजदीकी क्षण में, इंटरव्यू में भी अगर हार हो जाये पर ईमानदारी से समझौता नहीं करना, ऐसे नैतिक मूल्यों की शिक्षा का रोपण इन्हीं माध्यमों से किया जाता है। समाज में किसी फिल्म के अभिनेता के माध्यम से एक सकारात्मक प्रभाव डालकर युवावर्ग को एक और मिसाल कायम करने की प्रेरणा मिलती है।

000



2023-24

2023-24

2023-24

2023-24 साहित्य-संस्कृति से जुड़ी महान हस्तियों का जन्मशती वर्ष है। उन्हें स्मरण करने का अर्थ अपनी परम्परा के सूत्रों से जुड़ना और यह भी याद रखना है कि वे न होते तो हमारा जीवन ठीक नहीं होता, जैसा कि वह है। हमारे सांस्कृतिक जीवन में उनका हस्तक्षेप गहरे मायने रखता है। इसलिए हम उन्हें स्मरण करते हैं।

शताब्दी स्मरण

2023-24

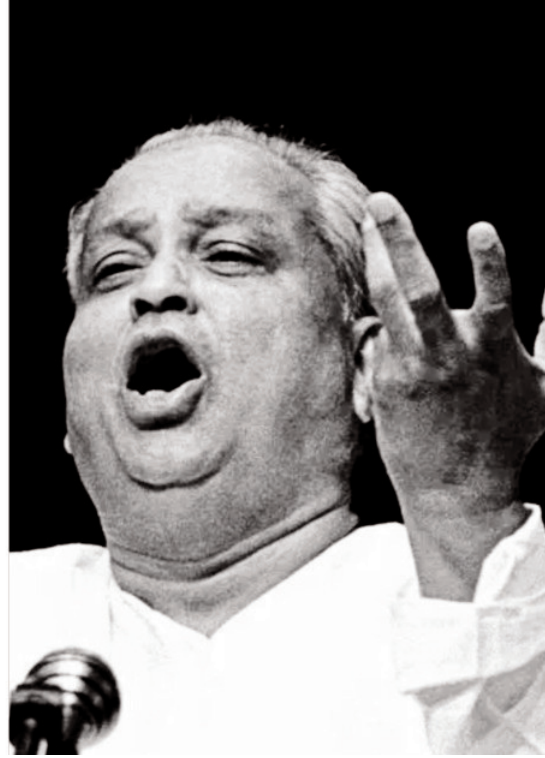
कुमार गंधर्व

(8 अप्रैल 1924 - 12 जनवरी 1992)

पंडित कुमार गंधर्व भारत के सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायक थे, उनका मूल नाम शिवपुत्र सिद्धराम कोमकाली था। कुमार गंधर्व का जन्म सुलेभवि, बेलगाम (कर्नाटक) में एक कन्नड़ भाषी लिंगायत परिवार में हुआ था। शिवपुत्र जन्मजात गायक थे। पाँच वर्ष की आयु से ही उनमें संगीत प्रतिभा के संकेत दिखने लगे थे और दस वर्ष की आयु में वो मंच पर गाने लगे थे। ग्यारह वर्ष की आयु में उनके पिता ने उन्हें संगीत की शिक्षा के लिए शास्त्रीय संगीत के सुप्रसिद्ध प्राध्यापक, बी. आर. देओधर के पास भेज दिया। वे ऐसा चमत्कारी गायन करते थे कि उनका नाम कुमार गंधर्व पड़ गया। उनके संगीत के ज्ञान और कुशलता में प्रगति इतनी तीव्र थी कि बीस की उम्र आते आते वे खुद ही अपने संगीत विद्यालय में संगीत सिखाने लगे। उनके आलोचकों ने भी उनको संगीत के क्षेत्र का एक उभरता हुआ सितारा मानना शुरू कर दिया।

पंडित कुमार गंधर्व को जो एक बार सुन ले वह उन्हें कभी भूल नहीं सकता है। कुमार गंधर्व हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत दोनों में महत्वपूर्ण नाम है। कुमार जी के गाए हुए कबीर के भजन एवं निर्गुण भजन हमें आध्यात्म की उन ऊँचाइयों पर पहुँचा देते हैं, जहाँ पहुँचने में साधक को वर्षों साधना करनी होती है। कुमार गंधर्व जी के गाए हुए राग मालकोश और भीमपलासी को कोई भूल नहीं सकता है। कुमार गंधर्व हमेशा निर्गुण और निराकार की ओर ही अपने गायन के माध्यम से लोगों को दिशा देते रहे। ध्यान और साधना की चाहत जो भी रखते हैं, उनके लिए प्रतिदिन कुमार गंधर्व को सुनना उनके सफर को आसान, सुमधुर और नजदीक बना देता है।

1947 में गंधर्व ने भानुमती से विवाह किया जो

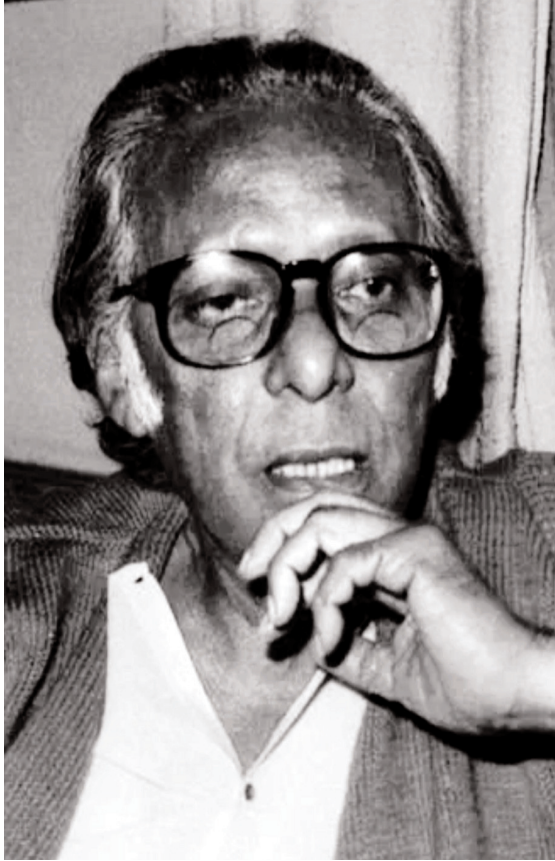


देओधर जी के विद्यालय में गायन की शिक्षिका थी। उसके कुछ ही समय पश्चात गंधर्व टीबी (क्षय रोग) की बीमारी से ग्रसित हो गए और चिकित्सकों ने उन्हें बताया कि वे दुबारा कभी गा नहीं पाएँगे। चिकित्सकों के अनुसार गायन उनके लिए प्राणघातक सिद्ध हो सकता था। चिकित्सकों की सलाह पर अपने स्वास्थ्य में सुधार के लिए वे देवास (मध्य प्रदेश), जो कि एक शुष्क जलवायु वाला स्थान है, जाकर रहने लगे। अगले 6 साल गंधर्व ने बीमारी और खामोशी में बिताए। बाद में भानुमती के देहांत के पश्चात कुमार ने वसुंधरा कोमकली से विवाह किया।

उन्हें सन् 1977 में भारत सरकार द्वारा उन्हें कला के क्षेत्र में पद्मभूषण, सन् 1980 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

2023-24

मृणाल सेन



(14 मई 1923-30 दिसंबर 2018)

मृणाल सेन भारतीय फ़िल्मों के प्रसिद्ध निर्माता व निर्देशक थे। इनकी अधिकतर फ़िल्में बांग्ला भाषा में हैं। उनका जन्म फरीदपुर नामक शहर में (जो अब बांग्ला देश में है) हुआ था। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने बाद उन्होंने वह शहर छोड़ दिया और कोलकाता में पढ़ने के लिये आ गये। वह भौतिक शास्त्र के विद्यार्थी थे और उन्होंने अपनी शिक्षा स्कॉटिश चर्च कॉलेज एवं कलकत्ता यूनिवर्सिटी से पूरी की। इप्टा से जुड़े होने के कारण उनका अपने समान विचारों वाले सांस्कृतिक रुचि के लोगों से

परिचय हुआ। उन्हें अक्सर वैश्विक मंच पर बंगाली समानांतर सिनेमा के सबसे बड़े राजदूतों में से एक माना जाता है।

मृणाल सेन, उन फ़िल्मकारों में से थे जिनकी हर फ़िल्म, समाज के यथार्थ को प्रदर्शित करने वाली एक बेहद शानदार कलात्मक कृति होती थी। उनकी फ़िल्मों में समाज के दलित, वंचित, शोषित लोगों की भावनाओं को बड़ी कुशलता के साथ उकेरा जाता था। कुछ समय के लिए उन्हें मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव की नौकरी के कारण कलकत्ता से दूर होना पड़ा, मगर यह बहुत ज्यादा समय तक नहीं चला। वे वापस आए और कलकत्ता फिल्म स्टूडियो में ध्वनि टेक्नीशियन के पद पर कार्य करने लगे जो आगे चलकर फिल्म जगत में उनके प्रवेश का कारण बना।

उनकी कुछ प्रमुख फ़िल्में भुवन शोमे, मृगया, खंडहर, अकालेर संधाने, पदातिक, खानधार, परशुराम, खारिज, एक दिन अचानक आदि हैं।

30 दिसम्बर 2018 को मृणाल सेन का उनके कोलकत्ता स्थित निज निवास में 95 वर्ष की आयु में हृदयाघात से निधन हो गया।

सम्मान और पुरस्कार - मृणाल सेन को अपनी फ़िल्मों के लिये देश-विदेश से कई सम्मान हासिल हुए हैं। इसके साथ ही मृणाल सेन को भारत सरकार द्वारा 1981 में कला के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। भारत सरकार ने उनको पद्म विभूषण पुरस्कार एवं 2005 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्रदान किया। उनको 1998 से 2000 तक मानक संसद सदस्यता भी मिली। फ्रांस सरकार ने उनको कमांडर ऑफ द ऑर्ट, ऑफ ऑर्ट एंडलेटर्स उपाधि से एवं रशियन सरकार ने ऑर्डर ऑफ फ्रेंडशिप सम्मान प्रदान किया।

2023-24

तपन सिन्हा

(2 अक्टूबर 1924 - 15 जनवरी 2009)

तपन सिन्हा बांगला सिनेमा एवं हिन्दी सिनेमा के प्रसिद्ध निर्देशक थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में एम.एस-सी. की डिग्री लेने वाले तपन सिन्हा ने 1946 में न्यू थिएटर स्टूडियो में सहायक साउंड रिकॉर्डिस्ट के रूप में अपना करियर शुरू किया था। इसके पश्चात वे कलकत्ता मूवीटोन स्टूडियो में काम करने लगे। उन्होंने 1950 में लंदन के पाइनवुड स्टूडियो में भी काम किया। लंदन से लौटने के बाद उन्होंने अपनी पहली फिल्म अंकुश बनाई।

वे सबसे अधिक गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के कार्यों से प्रभावित थे। तपन सिन्हा ने बांग्ला फिल्म अभिनेत्री अरुंधती देवी से विवाह किया था। तपन सिन्हा की पहली फिल्म अंकुश 1954 में रिलीज़ हुई थी। काबुलीवाला, क्षुधित पाषाण, सफेद हाथी, एक डॉक्टर की मौत, निर्जन साकते, हाटे बाज़ारे, आदमी और औरत, सगीना महतो उनकी प्रमुख फिल्में हैं। अपने फ़िल्मी करियर में उन्होंने 41 फिल्मों बनाई, इनमें से 19 फिल्मों को विभिन्न श्रेणियों में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी अधिकतर फिल्मों का विषय बंगाल का मध्य वर्ग और उसका संघर्ष हुआ करता था। इन्होंने बावर्ची जैसी कई फिल्मों की कहानी भी लिखी है। सगीना महतो और सफेद हाथी जैसी उल्लेखनीय फिल्मों बनाने वाले सिन्हा विभिन्न श्रेणियों में 19 राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किए गए।

उनकी फिल्मों लंदन, वेनिस, मास्को और बर्लिन में आयोजित होने वाले अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी दिखाई और पुरस्कृत की गईं। फिल्म 'काबुलीवाला' के लिए तपन सिन्हा को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया था। स्वतंत्रता की 60 वीं जयंती पर भारत सरकार ने उन्हें फिल्म जगत में अद्वितीय योगदान के लिए



अवार्ड फॉर लाइफ टाइम अचीवमेंट से सम्मानित किया था। 2006 में उन्हें भारतीय फिल्म जगत के सबसे बड़े पुरस्कार दादा साहेब फ़ाल्के से सम्मानित किया गया।

तपन सिन्हा अपने जीवन की संध्या में हृदय रोग से पीड़ित हो गये थे और अन्ततः 15 जनवरी 2009 को उनका निधन हो गया।

2023-24

मदन मोहन



(25 जून 1924- 14 जुलाई 1975)

मदन मोहन हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध संगीतकार हैं। गजलों और नज़्मों की रूहानी तर्जों के सृजन के लिए अपना लोहा मनवाने वाले इस संगीतकार का पूरा नाम मदन मोहन कोहली था। अपनी युवावस्था में ये एक सैनिक थे। बाद में संगीत के प्रति अपने झुकाव के कारण ऑल इंडिया रेडियो

से जुड़ गए। वर्ष 1943 में सेना में द्वितीय लेफ्टिनेंट के रूप में शामिल हुए। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक दो साल तक वहाँ सेवा की, फिर उन्होंने सेना छोड़ दी और अपने संगीत हितों को आगे बढ़ाने के लिए मुंबई लौट आए।

1946 में, वह ऑल इंडिया रेडियो, लखनऊ में कार्यक्रम सहायक के रूप में शामिल हुए, जहाँ वे उस्ताद फैयाज खान, उस्ताद अली अकबर खान, बेगम अख्तर और तलत महमूद जैसे विभिन्न कलाकारों के संपर्क में आए। इन दिनों के दौरान उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के लिए संगीत की रचना भी की। 1947 में, उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली में स्थानांतरित कर दिया गया जहाँ उन्होंने छोटी अवधि के लिए काम किया। उन्हें गायन का बहुत शौक था, और इसलिए 1947 में उन्हें बेहज़ाद लखनावी द्वारा लिखित दो गज़लें रिकॉर्ड करने का पहला मौका मिला। इसके तुरंत बाद, 1948 में उन्होंने दीवान शरार द्वारा लिखित दो और निजी गज़लें रिकॉर्ड कीं - 'वो आये से महफ़िल में इठलाते हुए आये' और 'दुनिया मुझसे कुछ भी नहीं मिला' ।

1948 में उन्हें फिल्म शहीद के लिए संगीतकार गुलाम हैदर (संगीतकार) के तहत लता मंगेशकर के साथ फिल्म युगल 'पिंजरे में बुलबुल बोले और मेरा छोटा दिल डोले' गाने का पहला मौका मिला, हालाँकि ये गीत फिल्म में कभी भी रिलीज़ या उपयोग नहीं किए गए थे।

1946 और 1948 के बीच, उन्होंने संगीतकार एस.डी. बर्मन के लिए 'दो भाई' के लिए और श्याम सुंदर के लिए 'एक्ट्रेस' के लिए संगीत सहायक की भूमिका भी निभाई ।

2023-24

राज कपूर

(14 दिसम्बर 1924 - 2 जून 1988)

राज कपूर हिन्दी सिनेमा के प्रसिद्ध अभिनेता, निर्माता एवं निर्देशक थे। उनका पूरा नाम रणवीर राज कपूर था। वे मशहूर अदाकार पृथ्वीराज कपूर के पुत्र थे। उनका जन्म पेशावर, पश्चिमोत्तर सीमांत ब्रिटिश भारत (वर्तमान में खैबर पख्तूनख्वा, पाकिस्तान) में हुआ था। उनका विवाह 1946 में कृष्णा मल्होत्रा से हुआ था जो मशहूर कलाकार प्रेमनाथ की बहन थीं। वे नेहरूवादी समाजवाद से प्रेरित रहे।

वे भारत में अपने समय के सबसे बड़े शोमैन थे। सोवियत संघ और मध्य-पूर्व में राज कपूर की लोकप्रियता दंतकथा बन चुकी है। उनकी फिल्मों खासकर श्री 420 में बंबई की जो मूल तस्वीर पेश की गई है, वह फिल्म निर्माताओं को अभी भी आकर्षित करती है।

सन् 1935 में मात्र 11 वर्ष की उम्र में राजकपूर ने फिल्म इंकलाब में अभिनय किया था। राज कपूर को सन् 1947 में अपनी फिल्म नीलकमल में नायक की भूमिका दे दी। नायक के रूप में राज कपूर का फिल्मी सफर हिन्दी सिनेमा की वीनस मानी जाने वाली सुप्रसिद्ध अभिनेत्री मधुबाला के साथ आरंभ हुआ। नरगिस के अतिरिक्त मधुबाला के साथ ही राज कपूर ने सबसे अधिक फिल्मों में नायक की भूमिका की।

सन् 1950 में नायक के रूप में राज कपूर की छह फिल्में आयीं। राज कपूर के पूरे नायक युग में एक वर्ष में इससे अधिक फिल्में कभी नहीं आयीं। केदार शर्मा के निर्देशन में गीता बाली के साथ 'बावरे नैन', ए.आर. कारदार के निर्देशन में सुरैया के साथ 'दास्तान', जी. राकेश के निर्देशन में निम्मी के साथ 'भँवरा', और रेहाना के साथ पी.एल. सन्तोषी के निर्देशन में 'सरगम' सन् 1950 में रिलीज होने वाली फिल्में थीं। इनमें कारदार की 'दास्तान' सबसे अधिक सफल रही। यह एकमात्र फिल्म है जिसमें राज कपूर, सुरैया के साथ नायक बने। सरगम, दास्तान और बावरे नैन का संगीत अत्यधिक लोकप्रिय हुआ।



'सरगम' और 'बावरे नैन' भी टिकट-खिड़की पर सफल रहीं।

इसके बाद तो महबूब, केदार शर्मा, नितिन बोस, विमल राय, महेश कौल, वी शांताराम जैसे महामहिमों के रहते नौसिखए राज कपूर ने अपनी फिल्म आवारा से साबित कर दिया कि वह हर मोर्चे पर बड़े-बड़े दिग्गजों के हौसले पस्त कर सकता है। उन्हें फिल्मों के लिए कई फिल्मफेयर पुरस्कार एवं राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया।

राज कपूर को कला के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा, सन् 1971 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उन्हें सन् 1987 में फिल्म जगत से सबसे बड़े सम्मान दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

2023-24

धूमिल



(09 नवम्बर 1936-10 फ़रवरी 1975)

धूमिल हिंदी की समकालीन कविता के दौर के मील के पत्थर सरीखे कवियों में एक हैं। धूमिल का जन्म वाराणसी के पास खेवली गाँव में हुआ था। उनका मूल नाम सुदामा पांडेय था। धूमिल नाम से वे जीवन भर कवितायें लिखते रहे। सन् 1958 में आई. टी. आई. (वाराणसी) से विद्युत डिप्लोमा लेकर वे वहीं विद्युत अनुदेशक बन गये।

उनकी कविताओं में आजादी के सपनों के मोहभंग की पीड़ा और आक्रोश की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। सन 1960 के बाद की हिंदी कविता में जिस मोहभंग की शुरुआत हुई थी, धूमिल उसकी अभिव्यक्ति करने वाले

अंत्यत प्रभावशाली कवि हैं। उनकी कविता में परंपरा, सभ्यता, सुरुचि, शालीनता और भद्रता का विरोध है, क्योंकि इन सबकी आड़ में जो हृदय पलता है, उसे धूमिल पहचानते हैं। कवि धूमिल यह भी जानते हैं कि व्यवस्था अपनी रक्षा के लिये इन सबका उपयोग करती है, इसलिये वे इन सबका विरोध करते हैं। इस विरोध के कारण उनकी कविता में एक प्रकार की आक्रामकता मिलती है। किंतु उससे उनकी कविता की प्रभावशीलता बढ़ती है। धूमिल अकविता आन्दोलन के प्रमुख कवियों में से एक हैं। धूमिल अपनी कविता के माध्यम से एक ऐसी काव्य भाषा विकसित करते हैं जो नई कविता के दौर की काव्य - भाषा की रुमानियत, अतिशय कल्पनाशीलता और जटिल बिंबधर्मिता से मुक्त है। उनकी भाषा काव्य-सत्य को जीवन सत्य के अधिकाधिक निकट लाती है।

धूमिल हिंदी के उन उत्कृष्ट जनकवियों में से हैं जो समाज को एक्सट्रेक्ट की तरह नहीं, एक सजीव कोलाज की तरह कविता के कैनवस पर उतार देते हैं। धूमिल को पढ़ते हुए हिंदी का पाठक खुद को, खुद के समय में खुद की सच्चाइयों से घिरा हुआ पाता है। धूमिल की यही विशेषता उन्हें एक सच्चा जनकवि बनाती है। 38 वर्ष की अल्पायु में ही ब्रेन ट्यूमर से उनकी मृत्यु हो गई।

कुछ प्रमुख कृतियाँ

‘संसद से सड़क तक’ (1972) के लिए 1975 में मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद द्वारा मुक्तिबोध पुरस्कार से सम्मानित, ‘कल सुनना मुझे’ के लिये 1979 का साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

2023-24

गतिविधियाँ 2023-24



विद्यार्थी कैम्पस बाजार



यूथ फेस्टिवल में छात्र/छात्राओं की भागीदारी



विद्यार्थी द्वारा मिलेट्स जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन



स्टूडेंट प्लेसमेंट कैम्पस का आयोजन



एन.सी.सी. के छात्रों द्वारा रैकिंग सेरेमनी



राज्य पुरातत्व विभाग के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में इतिहास विभाग के विद्यार्थी

गतिविधियाँ 2023-24



'पालने में पूत' नाटक का मंचन



युवा उत्सव में छात्र/छात्राओं की सहभागिता



अमृत कलश यात्रा हेतु चयनित छात्र

प्राचार्य, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित तथा विकल्प विमर्श द्वारा मुद्रित।
फोन- 0788 2211688 ई मेल:pprinci2010@gmail.com वेबसाइट www.govtsciencecollegedurg.ac.in